सांध्य दैनिक

4PM

कोई लोहे को नष्ट नहीं कर सकता, लेकिन उसकी अपनी जंग कर सकती है! उसी तरह कोई किसी इंसान को बर्बाद नहीं कर सकता, लेकिन उसकी अपनी मानसिकता कर सकती है।
-रतन टाटा

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 12 ● अंक 154 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 11 जुलाई, 2026

क्लीन स्वीप से बचने के इरादे से... 7 | मप्र-बिहार में होने है उपचुनाव बढ़ा... 3 | जिसके हाथ में लगाम, वही है... 2

भाजपा में बगावत की शुरुआत!

एक टिकट और पूरा शहर ठप

» मध्य प्रदेश के दतिया से नरोत्तम मिश्रा का टिकट कटा, भारी बवाल

» एएसपी समेत दर्जनों पुलिसकर्मी चोटिल उप-चुनाव में काटा है बीजेपी ने टिकट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राजनीति में कहा जाता है कि चुनाव लोकतंत्र का पर्व होता है। लेकिन यह लोकतंत्र अब भीड़तंत्र में बदल चुका, अब पार्टी के टिकट कटने के साथ ही सड़कें जाम होना शुरू हो गयी हैं। पुलिस पर पत्थर बरसने लगें हैं और समर्थक अपनी ही पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोलने से परहेज नहीं कर रहे। सवाल उठना लाजिमी है कि क्या भारतीय राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर रही है? मध्य प्रदेश के दतिया से आई तस्वीरें सिर्फ एक विधानसभा की कहानी नहीं लगतीं। भारतीय जनता पार्टी ने उपचुनाव के लिए पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा का टिकट काटा और देखते ही देखते समर्थकों का गुस्सा सड़कों पर उतर आया। हाईवे जाम हो गया। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव हुआ। एएसपी समेत कई पुलिसकर्मी घायल हुए। बाजार बंद का आह्वान हुआ।

सवाल यह नहीं कि एक नेता का टिकट क्यों कटा। सवाल यह है कि क्या अब राजनीतिक दलों में टिकट वितरण लोकतांत्रिक प्रक्रिया कम और शक्ति प्रदर्शन का कारण ज्यादा बनता जा रहा है? यह कहानी सिर्फ दतिया की नहीं है। लगभग हर बड़े दल में एक सीट पर कई दावेदार हैं। भाजपा जैसी विशाल संगठनात्मक पार्टी में तो अनेक सीटों पर एक टिकट के लिए कई प्रभावशाली चेहरे वर्षों से मेहनत करते हैं। टिकट एक को मिलता है लेकिन असंतोष कई लोगों के हिस्से आता है। अब तक यह असंतोष बंद कमरों में सिमट जाता था। लेकिन अगर वह सड़कों पर उतरने लगे तो चुनावी राजनीति का चरित्र बदल सकता है। कल्पना कीजिए अगर यही तस्वीर आने वाले विधानसभा और लोकसभा चुनावों में देशभर में दोहराई जाने लगी तो क्या होगा? हर टिकट के बाद प्रदर्शन हर सूची के बाद सड़क जाम हर असंतुष्ट नेता के समर्थन में शक्ति प्रदर्शन क्या चुनाव प्रचार से ज्यादा ऊर्जा टिकट विरोध में खर्च होगी?

दतिया से उठी चिंगारी कहीं देशभर में आग न बन जाए!

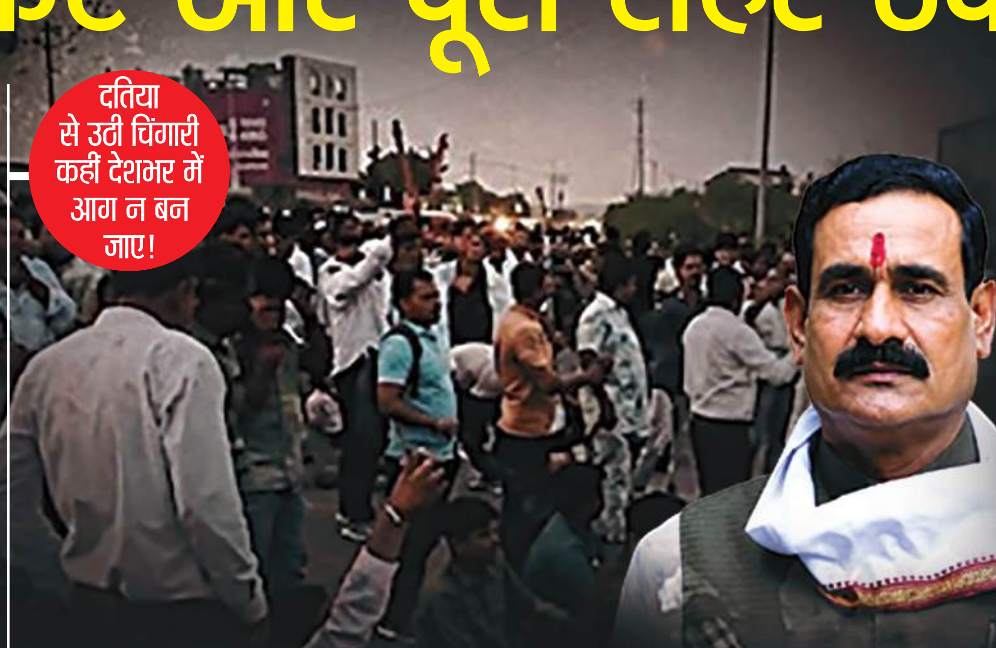

नरोत्तम के समर्थन में सभी पदाधिकारियों का इस्तीफा

स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भाजपा के स्थानीय पदाधिकारियों ने भी अपने पदों से इस्तीफे दे दिए। समर्थकों ने टायर जलाकर और नारेबाजी कर पार्टी नेतृत्व के फैसले के खिलाफ खुला विरोध दर्ज कराया। आज दतिया बंद का भी आह्वान किया गया है, जिससे राजनीतिक तनाव और बढ़ गया है।

प्रशासनिक चूक हालात बेकाबू

घंटो चक्का जाम की स्थिति बनी रही

दतिया के जिलाधिकारी स्वप्निल वानखेड़े ने कहा है कि घंटो चक्का जाम की स्थिति बनी रही। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारियों को शांतिपूर्वक समझाने का प्रयास किया गया लेकिन वह हटने को तैयार नहीं थे। इसके बाद उन्हें हटाने के लिए प्रशासन की ओर से आंसू गैस के गोले दागे गए। पथराव में कई पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। डीएसपी, एसडीओपी और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) को भी चोटें आई हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी प्रदर्शनकारियों को चेतावनी दी गई है कि कोई भी व्यक्ति शांति भंग करने का प्रयास न करे। उन्होंने कहा कि प्रशासन आचार संहिता के पालन को लेकर पूरी तरह सख्त है। वानखेड़े ने कहा कि किसी राजनीतिक दल द्वारा किसे टिकट दिया जाए यह उसका आंतरिक मामला है लेकिन ऐसे मामलों के कारण आम लोगों को परेशानी नहीं होनी चाहिए। बाजार बंद के आह्वान पर जिलाधिकारी ने कहा कि प्रदर्शनकारियों ने एक दिन पहले बाजार बंद का ऐलान किया था, जिससे व्यापारी सहमत नहीं थे। इसके मद्देनजर बाजारों में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी को भी जबरन बाजार बंद नहीं कराने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करने के लिए सीआरपीएफ की 16 कंपनियां उपलब्ध कराई गई हैं और सभी मतदाताओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी।

दतिया के पुलिस अधीक्षक मयूर खंडेलवाल ने कहा कि पत्थरबाजी के बाद पुलिस की ओर से आंसू गैस के गोलों का प्रयोग किया गया। कई कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हैं। एडिशनल एसपी को भी चोटें आई हैं। अच्छी बात यह है कि इस दौरान हम लोगों की ओर से लाठीचार्ज नहीं किया गया है। उपद्रव करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है और कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। आचार संहिता के दौरान किसी की ओर से भी शांति भंग करने की कोशिश की गई तो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पार्टी का टिकट राजनीतिक अस्तित्व का अंतिम प्रमाणपत्र

मध्य प्रदेश के हालात को देखते हुए कई सवाल जन्म ले रहे हैं कि क्या दतिया की घटना पूरे देश की दिशा तय कर देगी? क्या राजनीतिक दलों का आंतरिक अनुशासन पहले जैसा मजबूत नहीं रहा? क्या कार्यकर्ता अब फैसलों को संगठन का निर्णय मानने के बजाय व्यक्तिगत सम्मान का प्रश्न बना रहे हैं? और सबसे अहम सवाल क्या टिकट अब सिर्फ चुनाव लड़ने का अधिकार नहीं बल्कि राजनीतिक अस्तित्व का अंतिम प्रमाणपत्र बन गया है? दतिया की सड़क पर जो गुस्सा दिखाई दिया वह चाहे स्थानीय परिस्थितियों का परिणाम हो या समर्थकों की भावनाओं का उफान लेकिन उसने भारतीय राजनीति को एक आईना जरूर दिखाया है। सवाल अब सिर्फ नरोत्तम मिश्रा का नहीं है। सवाल यह है कि अगर टिकट कटते ही बगावत का नया चलन शुरू हुआ तो आने वाले चुनावों में लोकतंत्र का सबसे बड़ा रणक्षेत्र मतदान केंद्र नहीं बल्कि राजनीतिक दलों के भीतर ही बन जाएगा।

क्या चुनावी मौसम में हर टिकट बनेगा राजनीतिक विस्फोट?

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व गृह मंत्री और छह बार के विधायक रहे डॉ. नरोत्तम मिश्रा का दतिया विधानसभा उपचुनाव में टिकट कटना सिर्फ एक राजनीतिक फैसला नहीं रहा बल्कि उसने सियासी भूचाल का रूप ले लिया। भाजपा ने इस बार नरोत्तम मिश्रा की जगह पूर्व संभागीय संगठन मंत्री आशुतोष तिवारी पर दांव लगाया जिसके बाद नाराज समर्थक सड़कों पर उतर आए। दतिया-झांसी हाईवे को नरोत्तम मिश्रा के समर्थकों ने जाम कर दिया। देखते ही देखते करीब तीन किलोमीटर लंबा जाम लग गया जिससे दतिया, झांसी, शिवपुरी और ग्वालियर तक यातायात प्रभावित हुआ। हालात इतने बिगड़ गए कि पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव की नौबत आ गई। पुलिस के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने पथराव किया जिसमें कई पुलिसकर्मी घायल हुए। प्रशासन को भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े।

जिसके हाथ में लगाम, वही है बेलगाम : अखिलेश यादव

» मेरठ में दलित छात्रा हत्याकांड के पीड़ित परिजनों से सपा प्रमुख ने की मुलाकात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा चीफ अखिलेश यादव ने मेरठ में हुई दलित छात्रा ललिता गौतम की हत्या पर भाजपा सरकार को आड़े हाथों लिया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पीड़ित परिजनों से मुलाकात की और न्याय की इस लड़ाई में साथ खड़े रहने का आश्वासन दिया है। इसके साथ ही सपा चीफ ने कहा कि बीजेपी सरकार पीड़ित परिवार की हर मांग पूरी करे और मृतक बेटी को न्याय मिले।

वहीं सपा चीफ अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा-जब वो खुद ही बेलगाम है जिसके हाथ में लगाम है, तो फिर उनका क्या, जो उनके दरबार में दरबान है!' मेरठ की बेटी' के साथ हुए महा-अत्याचार व हत्या के बाद जिस तरह नामजद आरोपियों पर कमजोर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है और आंदोलनकारियों पर गंभीर धाराओं में मुकदमा लगाया गया है, वो नाइंसाफी की पराकाष्ठा है।

पीडीए अब सहेगा नहीं, कहेगा

पूर्व मुख्यमंत्री ने आगे लिखा-इससे भी अधिक गंभीर बात ये है कि जिस पुलिस से न्याय की उम्मीद होती है, उनके ही उच्चाधिकारी अन्याय और अपने अहंकार के अनवरत झापड़ आम जनता के गाल पर मार रहे हैं, पूरी दुनिया में फैल चुका जिसका वीडियो उत्तर प्रदेश की पुलिस की छवि को खंडित कर रहा है. इससे वो पुलिसकर्मी भी शर्मिंदा हैं जो अपनी कर्तव्यपरायणता और आम जनता के प्रति संवेदनशील हैं और सदैव मानवीय दृष्टिकोण से अपना काम करते हैं। पीडीए अब सहेगा नहीं, कहेगा!

अब जनता भाजपाइयों का भाषण सुनने के मूड में नहीं

सच तो ये है कि जिस राज्य का मुख्य ही महिलाओं के साथ, विशेष रूप से एक युवा मृतक की शोक-संतप्त माँ से सरेआम अभद्रता का वाचन करे, उसकी पुलिस से कोई भी उम्मीद करना बेमानी है। मस्तिष्क का आदेश ही, उँगलियाँ मानती हैं। अब जनता भाजपाइयों का भाषण सुनने के मूड में नहीं है।

मेरठ हत्याकांड का मामला लोस में उठाऊंगा : चंद्रशेखर आजाद

» पीड़ित परिवार से मिले आजाद समाज पार्टी सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ में अनुसूचित जाति की छात्रा की हत्या के मामले में आजाद समाज पार्टी के प्रमुख चंद्रशेखर आजाद को पुलिस ने सिवाया टोल प्लाजा पर रोक दिया। बाद में प्रशासन ने पीड़ित परिवार को टोल प्लाजा नियंत्रण कक्ष में बुलाकर सांसद से उनकी मुलाकात कराई। सांसद ने निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए पुलिस कार्रवाई की आलोचना की और इसे संसद में उठाने की बात कही। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में अनुसूचित जाति की एक छात्रा की हत्या के मामले में नया मोड़ आया है।

आजाद समाज पार्टी के प्रमुख और नगीना लोकसभा सीट से सांसद चंद्रशेखर आजाद को शुक्रवार को पीड़ित परिवार के गांव जाने से पहले पुलिस ने सिवाया टोल प्लाजा पर रोक दिया। इसके बाद काफी देर तक वहां तनाव और गहमागहमी की स्थिति बनी रही। कई घंटों तक चले इस घटनाक्रम के बाद स्थानीय प्रशासन ने पीड़ित परिवार को सिवाया टोल प्लाजा पर बने नियंत्रण कक्ष में बुलाया। यहीं पर सांसद चंद्रशेखर आजाद ने मृतका की मां और बहन से मुलाकात की। वरिष्ठ पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में हुई इस मुलाकात के दौरान सांसद ने पीड़ित परिवार को सांत्वना दी और न्याय दिलाने के लिए हरसंभव सहयोग का भरोसा दिया। चंद्रशेखर आजाद ने पत्रकारों से बातचीत में बिना नाम लिए बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि केवल बयानबाजी करने से काम नहीं चलेगा, बल्कि पीड़ित परिवार के साथ जमीन पर खड़ा होना भी जरूरी है। गौरतलब है कि इससे पहले मायावती ने भी बिना किसी का नाम लिए आरोप लगाया था कि कुछ राजनीतिक दल और संगठन अपने राजनीतिक हितों के लिए दलित समाज की भावनाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं।

मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए

मुलाकात के बाद पत्रकारों से बातचीत में चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और दोषियों के खिलाफ सख्त

कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने पिछले दिनों विरोध प्रदर्शन कर रहे दलित समाज के लोगों पर की गई पुलिस कार्रवाई का कड़ा विरोध किया। सांसद ने कहा कि किसी भी स्थिति में जनता पर बल प्रयोग करना बिल्कुल भी उचित नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि लोगों के विरोध की आवाज को दबाने का प्रयास किया गया।

चुनाव आते ही राहुल का लग जाता है आना-जाना : धामी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी के प्रस्तावित देहरादून दौरे को लेकर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि चुनाव के समय आना जाना लगा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि पेपर लीक कांग्रेस की सरकार के समय होता था, हमारी सरकार में नहीं होता।

राहुल गांधी के आगामी प्रस्तावित दौरे को लेकर कांग्रेस जहां तैयारियों में जुटी है तो भाजपा तंज कस रही है। राहुल गांधी के दौरे पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने निशाना साधते हुए कहा कि चुनाव के समय आना जाना तो लगा रहता है। सीएम धामी ने कहा कि पेपर लीक तो कांग्रेस सरकार के समय भी होता था लेकिन ये हमारी सरकार में तो हुआ नहीं है। ये सवाल तो कांग्रेस को खुद से और अपने पार्टी के लोगों से पूछना चाहिए। चुनाव के समय आना जाना तो लगा रहेगा लेकिन अगर चुनाव से पहले आए होते तो गंभीरता की बात होती। ऐसे में अब कांग्रेस के नेता इस चुनावी दौर में कई बार आएंगे, ऐसे में ये सामान्य बात है।

टीएमसी नेताओं के ईडी छापे पर बवाल

टीएमसी बोली- सियासी बदले की भावना से हो रही कार्रवाई

» मामला कोलकाता हाईकोर्ट पहुंचा, सुनवाई सोमवार को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट (ईडी) की कार्रवाई पर बंगाल में सियासी बवाल मच गया। मामतला हाईकोर्ट पहुंच गया है। जहां टीएमसी इसे राजनीतिक बदले की भावना और उत्पीड़न का मामला बता रही है, वहीं केंद्रीय एजेंसी का कहना है कि वह मनी ट्रेल की जांच कर रही है। इसके अलावा, एनफोर्समेंट अधिकारियों ने नकली हस्ताक्षर अभियान मामले में पार्टी के एक प्रमुख नेता के ठिकानों पर भी कार्रवाई की है।

एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट (ईडी) के पार्टी के और बैंक अकाउंट्स को फ्रीज़ करने के आदेश के बाद तृणमूल कांग्रेस कलकत्ता हाई कोर्ट पहुंची है। इस मामले पर सोमवार को सुनवाई होने की उम्मीद है। यह घटनाक्रम तब हुआ है जब हाई कोर्ट की एक दूसरी बेंच ने सितंबर तक अंतरिम राहत दी थी, जिसमें स्पेशल ऑफिसर के तौर पर नियुक्त रिटायर्ड जस्टिस की देखरेख में तीन

बैंक अकाउंट्स से सीमित ट्रांज़ैक्शन की इजाज़त दी गई थी। जहां पॉलिटिकल पार्टी इसे राजनीतिक बदले की भावना और उत्पीड़न का मामला बता रही है, वहीं केंद्रीय एजेंसी का कहना है कि वह मनी ट्रेल की जांच कर रही है। इसके अलावा, एनफोर्समेंट अधिकारियों ने नकली हस्ताक्षर अभियान मामले में पार्टी के एक प्रमुख नेता के ठिकानों पर भी कार्रवाई की है। पार्टी के एक गुट ने कहा कि उसने पुरानी परंपरा के अनुसार धर्मतला में रैली करने की इजाज़त के लिए कोलकाता पुलिस को आवेदन दिया था। हालाँकि, पुलिस मुख्यालय लालबाज़ार से कोई साफ़ जवाब न मिलने पर, पार्टी ने कार्यक्रम की मंज़ूरी पाने के लिए कानूनी रास्ता अपनाने का फ़ैसला किया। इस हफ़्ते की शुरुआत में तनाव तब बढ़ गया जब झरूट नेता कुणाल घोष, बैश्वानर चट्टोपाध्याय और डोला सेन विक्टोरिया हाउस के सामने वाली जगह पर पहुँचे और बिना किसी औपचारिक मंज़ूरी के ही वहाँ मंच बनाने के लिए जगह नापते हुए देखे गए। इस कदम की विधानसभा में कड़ी आलोचना हुई। विपक्ष ने नेताओं के व्यवहार पर सवाल उठाए और कहा कि सार्वजनिक सड़कों पर मनमाने ढंग से कब्ज़ा नहीं किया जा सकता और न ही उन्हें इस तरह नापा जा सकता है जिससे ट्रैफ़िक में रुकावट आए। हालात तब और पेचीदा हो गए जब पुलिस ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत एक सख़्त आदेश जारी किया। इस आदेश के तहत मध्य कोलकाता के एक बड़े हिस्से में 60 दिनों तक 2 जुलाई से 30 अगस्त तक हर तरह की सार्वजनिक सभाओं पर रोक लगा दी गई है। पुलिस अधिकारियों ने संकेत दिया है कि इस दौरान धर्मतला में रैली की इजाज़त मिलने की संभावना कम है।

न्यायिक जांच और फॉरेंसिक ऑडिट की जाए : दीपेंद्र हुड्डा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मॉल एवेन्यू स्थित उत्तर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में ऑल इंडिया

कांग्रेस समिति के सदस्य एवं सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट पर वितीय अनियमितताओं और चढ़ावे के प्रबंधन को लेकर गंभीर आरोप लगाए।

उन्होंने आरोप लगाया कि मामले में केवल निचले स्तर के कर्मचारियों पर कार्रवाई कर शीर्ष पदाधिकारियों को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। कांग्रेस ने केंद्र सरकार से पूरे प्रकरण पर जवाब देने की मांग करते हुए दोषियों की गिरफ्तारी, सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में स्वतंत्र न्यायिक जांच तथा ट्रस्ट के वित्तीय लेन-देन का फॉरेंसिक ऑडिट कराने की मांग की। हालांकि, इन आरोपों पर संबंधित पक्ष की प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

अखिलेश यादववाद से ग्रसित समाजवाद का योद्धा : शादाब

» एआईएमआईएम ने सपा पर किया प्रहार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव 27 से पहले सियासी बयानबाजी का दौर तेज हो गया है, पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव के सनातन ही समाजवाद है वाले बयान पर राजनीति गरमा गई है। एआईएमआईएम प्रवक्ता शादाब चौहान ने अखिलेश यादव के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। शादाब चौहान ने अखिलेश यादव को यादववाद से ग्रसित समाजवाद का योद्धा करार दिया है।

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) प्रवक्ता शादाब चौहान ने अपनी एक्स पोस्ट में कहा है कि यादववाद से ग्रसित समाजवाद के योद्धा अखिलेश यादव बोल रहे हैं कि सनातन ही समाजवाद है, यानी जो सनातन की आस्था को नहीं मानेगा उनके अनुसार वह समाजवादी नहीं, कभी संविधान को दूसरे नंबर पर बताते हैं लेकिन वो भूल जाते हैं कि भारत के संविधान में सभी को बराबर का अधिकार प्राप्त है। उन्होंने कहा कि संविधान की खूबसूरती ये है कि अगर भगवा वस्त्र धारण किए बाबा मुख्यमंत्री बन सकते हैं तो कोई दाढ़ी-टोपी वाला या हिजाब वाली बहन भी मुख्यमंत्री बन सकती है. निश्चित हमें विश्वास है कि एक दिन अवश्य होगा और उत्तर प्रदेश की जनता के साथ बिना भेदभाव न्याय होगा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा,कानून व्यवस्था को सुगम बनाते हुए सभी का सम्मान व राजनीतिक भागीदारी भी सुनिश्चित होगी।

अखिलेश और सीएम योगी के बीच कौन सबसे बड़ा हिंदू की लड़ाई

शादाब चौहान ने कहा है कि उत्तर प्रदेश की आम जनता के मुद्दों को छोड़कर अखिलेश जी और योगी जी के बीच इस बात की लड़ाई है कि कौन बड़ा हिंदू. उन्होंने यह भी आरोप लगाया है कि योगी जी के इशारे पर अखिलेश जी गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कानून व्यवस्था, शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, मुसलमान और दलितों पर अत्याचार पर चर्चा नहीं करना चाहते।

मप्र-बिहार में होने है उपचुनाव बढ़ा सियासी तनाव

भाजपा-कांग्रेस-राजद व जनसुराज लगा रहे दांव

बांकीपुर में प्रशांत किशोर ने मुकाबला किया दिलचस्प

दतिया में कांग्रेस का नया प्लान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आजकल बिहार व मप्र में उपचुनाव का शोर तेजी में है। जहां मप्र में दतिया व बिहार में बांकीपुर में भाजपा की प्रतिष्ठा दांव पर है वहीं मप्र में कांग्रेस व बिहार में राजद के साथ जनसुराज की भी ताकत देखी जाएगी। हालांकि दोनों ही राज्यो में एनडीए की सरकारें 15 साल रहने के बाद फिर सत्ता में है। हालांकि चुनाव है तो सभी पार्टियों में तनाव बढ़ा हुआ है। किसी साख बचानी है तो किसी को वापस पानी है।

बांकीपुर उपचुनाव, जिसे प्रशांत किशोर ने बीजेपी सरकार के लिए जनमत संग्रह बताया है, बिहार में एक महत्वपूर्ण त्रिकोणीय मुकाबला बन गया है। इस सीट पर पहली बार चुनाव लड़ रहे प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी का सामना बीजेपी के दशकों पुराने गढ़ और उसके मजबूत संगठनात्मक ढांचे से होगा। कायस्थ मतदाताओं के वर्चस्व वाले बांकीपुर में बीजेपी के पारंपरिक वोट बैंक को तोड़ना जन सुराज के लिए बड़ी चुनौती है। भाजपा ने इस पर पलटवार करते हुए कहा कि राज्य में 25 के पिछले विधानसभा चुनावों में प्रशांत किशोर की पोल खुल चुकी थी और वे अपनी जमानत तक नहीं बचा पाए थे। इस बीच, पश्चिम बंगाल के आसनसोल से तृणमूल कांग्रेस सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने उम्मीदवार प्रशांत किशोर का समर्थन करते हुए उनकी उम्मीदवारी को राजनीतिक धमाका करार दिया। वहीं दतिया उपचुनाव में कांग्रेस की रणनीति बदली है। राजेंद्र भारती का परिवार चुनावी दौड़ से बाहर हो गया है। अब अवधेश नायक और घनश्याम सिंह टिकट की दौड़ में सबसे आगे हैं। पीसीसी अध्यक्ष जीतू पटवारी अंतिम निर्णय के लिए दिल्ली पहुंचे हैं, जबकि भाजपा में नरोत्तम मिश्रा ने भी दावेदारी मजबूत कर दी है।

भाजपा व कांग्रेस में सरगर्मी तेज, नये व पुराने को लेकर माथापच्ची

भारती परिवार के हटने से खाली हुई जगह अब नए चेहरे भरेंगे या पुराना चेहरा वापसी करेगा। उधर भाजपा में भी सरगर्मी तेज है। पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने नामांकन पत्र खरीदकर अपनी दावेदारी दिए पर उनका टिकट कट गया। ऐसे में कांग्रेस के लिए जल्द प्रत्याशी घोषित करना जरूरी हो गया है। नामांकन की आखिरी तारीख करीब है। जीतू पटवारी की दिल्ली बैठक के बाद तस्वीर साफ हो जाएगी। अगर अवधेश या घनश्याम सिंह में से किसी के नाम पर मुहर लगती है, तो कांग्रेस तुरंत प्रचार में जुट जाएगी। फिलहाल दतिया की सियासत में समीकरण तेजी से बदल रहे हैं।

प्रशांत किशोर खुद चुनाव लड़ रहे है चुनाव

बांकीपुर बिहार में सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाले मुकाबलों में से एक होने वाला है, और इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला कि प्रशांत किशोर खुद चुनाव लड़ रहे हैं। माना जा रहा है कि किशोर के चुनावी मैदान में उतरने के बाद वोटरों का एक बड़ा हिस्सा—जिन्होंने 2025 के विधानसभा चुनाव में जन सुराज के उम्मीदवार का समर्थन नहीं किया था—इस बार उनकी तरफ आ सकता है। उनकी अपील मुख्य रूप से पेशेवरों, सरकारी कर्मचारियों, मध्यम वर्ग और छात्रों के बीच रही है—ठीक उसी तरह के शहरी, पढ़े-लिखे वोटर जो बांकीपुर में बड़ी संख्या में हैं और जिनके उनके सुधारवादी, विकास-केंद्रित एजेंडे पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की संभावना है।

अब रेस में दो नाम सबसे मजबूत

भारती परिवार के हटने के बाद अब रेस में दो नाम सबसे मजबूत नजर आ रहे हैं। पहला नाम अवधेश नायक का है, जो दतिया के पुराने कांग्रेसी और जमीनी कार्यकर्ता माने जाते हैं। उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से नामांकन फॉर्म भी खरीद लिया है। दूसरा नाम घनश्याम सिंह का है। संगठन में उनकी पकड़ है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि इन्हीं दोनों में से किसी एक को टिकट मिलना तय है। अंतिम फैसला आलाकमान को लेना है।

पटवारी के लिए प्रतिष्ठा का सवाल

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी दिल्ली पहुंचे। वे वहां पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं से मुलाकात कर दतिया के उम्मीदवार के नाम पर चर्चा किया। पटवारी ने पहले ही कहा था कि उपचुनाव को कांग्रेस प्रतिष्ठा का सवाल बना रही है, इसलिए बिना देरी फैसला होगा। हाल में राज्यसभा चुनाव में हुई हार के बाद कांग्रेस पूरी तरह अलर्ट मोड में है। पार्टी ने दतिया के लिए विशेष रणनीति बनाई है। पूर्व विधायक शैलेंद्र पटेल ने कहा कि इस बार कोई चूक नहीं होगी। कांग्रेस प्लान बी के तहत डमी कैंडिडेट भी उतारेगी। इंदौर लोकसभा चुनाव में डमी फॉर्म न भरने के कारण हुई परेशानी को पार्टी दोहराना नहीं चाहती। इसलिए दतिया में मुख्य उम्मीदवार के साथ एक डमी फॉर्म भी दाखिल किया जाएगा, ताकि तकनीकी कारणों से नामांकन रद्द होने का खतरा न रहे।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की रही है सीट

बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र में उपचुनाव 30 जुलाई को होना है और नतीजे 3 अगस्त को आएंगे। बांकीपुर विधानसभा सीट तब खाली हुई थी जब बीजेपी के नितिन नवीन, जिन्होंने 25 का विधानसभा चुनाव जीता था, बाद में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और फिर राज्यसभा सदस्य चुने गए। बीजेपी ने बिहार में हाई-प्रोफाइल बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव के लिए अभिषेक कुमार को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। इससे जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर - जो खुद भी पहली बार चुनाव लड़ रहे हैं - और राष्ट्रीय जनता दल की नेता रेखा गुप्ता के बीच त्रिकोणीय मुकाबले का रास्ता साफ हो गया है।

बीजेपी बूथ पर मजबूत, जनसुराज के लिए चुनौती

हालांकि, असली सवाल यह है कि क्या जन सुराज इस सद्भावना को असल वोटों में बदल पाएगा। यह एक मुश्किल काम है क्योंकि पार्टी बूथ-स्तर के संगठन के मामले में कमजोर रही है, जबकि बीजेपी की दशकों से जमीनी स्तर पर मौजूदगी उसे इस मामले में काफी आगे रखती है। जन सुराज के प्रदेश अध्यक्ष मनोज भारती भी यह बात मानते हैं कि कुशल मैनपावर की कमी के कारण, अतीत में यह हमारी सबसे बड़ी गलती रही है। लेकिन इस बार, हमने उस गलती को सुधारा है, संगठनात्मक ताकत को मजबूत किया है और बूथ मैनेजमेंट के जरूरी कौशल को निखारा है ताकि हम बीजेपी का मुकाबला कर सकें।

दतिया से कांग्रेस प्रत्याशी चुनावी मैदान से हटे

दतिया विधानसभा उपचुनाव को लेकर कांग्रेस की रणनीति में बड़ा बदलाव हुआ है। सूत्रों के अनुसार राजेंद्र भारती का परिवार चुनावी मैदान से हट गया है। इसके बाद अब अवधेश नायक और घनश्याम सिंह का नाम सबसे आगे चल रहा है। इसी बीच पीसीसी चीफ जीतू पटवारी नाम पर अंतिम मुहर लगवाने के लिए दिल्ली पहुंच गए हैं। दतिया सीट पर लंबे समय से राजेंद्र भारती का दबदबा रहा है। उपचुनाव की घोषणा के बाद से उनके परिवार का नाम प्रमुख दावेदारों में गिना जा रहा था, लेकिन अब सूत्रों का कहना है कि परिवार ने चुनाव लड़ने से पीछे हटने का फैसला किया है। पारिवारिक कारणों और संगठनात्मक समीकरणों के चलते यह निर्णय लिया गया बताया जा रहा है। भारती परिवार के हटते ही कांग्रेस में नए चेहरों की चर्चा तेज हो गई।

1990 से ही बांकीपुर बीजेपी का गढ़

दूसरा कारण यह है कि 1990 से ही बांकीपुर बीजेपी का गढ़ रहा है। नवीन कुमार सिन्हा और नितिन नबिन की पिता-पुत्र की जोड़ी ने 1995 से 25 तक लगातार इस सीट पर कब्जा बनाए रखा। नवीन कुमार सिन्हा ने 1995 और फिर 2005 में पटना वेस्ट से जीत हासिल की और 20006 में अपनी मृत्यु तक इस पद पर रहे। इसके बाद उनके बेटे नितिन नबिन ने उपचुनाव जीता और 25 तक लगातार चार और बार जीत हासिल की। 2008 में निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन (सीमाओं के पुनर्निर्धारण) के बाद, पटना वेस्ट का नाम बदलकर बांकीपुर कर दिया गया।

ऊंची जातियों का दबदबा

जाति से कायस्थ होने के कारण, पिता-पुत्र की इस जोड़ी को निर्वाचन क्षेत्र की सामाजिक संरचना से बहुत फायदा मिला, जहाँ ऊंची जातियों का दबदबा है—अकेले कायस्थ ही कुल मतदाताओं का लगभग 23 प्रतिशत हैं। इससे उन्हें तीन दशकों में अपना एक मजबूत व्यक्तिगत समर्थन आधार बनाने में मदद मिली। कायस्थों के अलावा, बीजेपी को ब्राह्मणों, भूमिहारों, राजपूतों, वैश्यों और बनियों जैसे अन्य ऊंची जाति के समुदायों से भी लगातार समर्थन मिलता रहा है, जिससे यह सीट लगभग अजेय बन गई है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

पाठ्यक्रम बंद करने की जगह उनको आधुनिक बनाया जाए

> सरकारों को बल्कि ऐसे पाठ्यक्रम लाने चाहिए जो रोजगारपरक, गुणवत्तापरक और छात्रों का नैतिक निमार्ण करे। ताकि वह एक अच्छे नागरिक के साथ अपने हुनर से देश का नाम भी दुनिया में रोशन करें।

भारत शिक्षा प्रणाली में पाठयक्रम बदलना जैसे रिचार्ज सा बन गया है। जिस पार्टी की सरकार होती है वह स्कूलों के पाठ्यक्रम में अपने विचार वाले पुस्तकों को थोप देता है। कोई ये नहीं इससे कोई खास लाभ नहीं होता है। सरकारों को बल्कि ऐसे पाठयक्रम लाने चाहिए जो रोजगारपरक, गुणवत्तापरक और छात्रों का नैतिक निमार्ण करे। ताकि वह एक अच्छे नागरिक के साथ अपने हुनर से देश का नाम भी दुनिया में रोशन करें। पर अपने देश में सियासत इतनी हावी रहती है कि पूरी व्यवस्था चरमरा जाती है। कुल मिलाकर हमको कोर्स खत्म करने के बजाए उसका फिर से उपयोगी बनाना चाहिए। पड़ोसी देश चीन में हाल ही में शिक्षा प्रणाली में किए गए अभूतपूर्व बदलाव जिसके तहत 12,200 से अधिक पारंपरिक पाठ्यक्रमों को बंद कर 10,200 से अधिक भविष्य की तकनीक (जैसे एआई, सेमीकंडक्टर और रोबोटिक्स) पर आधारित नए कोर्स शुरू किए गए हैं, ने वैश्विक स्तर पर एक नई बहस छेड़ दी है।

चीन ने जिस तेजी से अपने 30 फीसदी से अधिक विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों को बदल दिया, वैसा कदम भारत में उठाना लाखों छात्रों के भविष्य को संकट में डाल सकता है। इसके पीछे दो मुख्य कारण हैं, भारत के महानगरीय और ग्रामीण इलाकों के कॉलेजों के बीच संसाधनों, डिजिटल और बुनियादी ढांचे की खाई का बहुत बड़ा अंतर है। दिल्ली या बेंगलूरु की आईआईटी में जो तकनीक उपलब्ध हैं, वह किसी टियर-3 शहर के सरकारी कॉलेज में नहीं है। भारत में कला, मानविकी और भाषाएं केवल डिग्रियां नहीं हैं, बल्कि ये देश की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता को बनाए रखने का माध्यम हैं। इसलिए, भारत का भविष्य कोर्सेज को खत्म करने में नहीं, बल्कि कोर्सेज को री-इमेजिन (पुनर्कल्पना) करने में है। यदि भारत को अपनी यानी दुनिया की सबसे युवा आबादी का सही लाभ उठाना है, तो अगले कुछ वर्षों में शिक्षा के ढांचे को पांच स्तरों पर बदलना होगा। कोर्सेज को बंद करने के बजाय एआई के साथ विलय किया जाना चाहिए। एआई-असिस्टेड ह्यूमैनिटीज के तहत अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के साहित्य के छात्रों को अनुवाद के साथ एआई प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग सिखाई जानी चाहिए क्योंकि भविष्य में नौकरी उसकी होगी जो एआई द्वारा किए गए अनुवाद को एडिट और रिफाइन कर सके। पारंपरिक फाइन आर्ट्स या फैशन डिजाइनिंग में जनरेटिव आर्टिफिशियल का प्रयोग करना होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

विरोध करना जनतंत्र की सार्थकता की पहली शर्त

विश्वनाथ सचदेव

शासन भले ही कोई भी चला रहा हो, पर जनतंत्र में असली शासक जनता ही होती है। जनता ही अपने वोट से शासन चलाने का अधिकार देती है या कहना चाहिए अवसर देती है। अब्राहम लिंकन ने जनतंत्र को परिभाषित करते हुए जनतांत्रिक सरकार को 'जनता की, जनता के लिए और जनता के द्वारा' बताया था। ऐसे में जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों से इतनी अपेक्षा तो की ही जानी चाहिए कि वे अपने असली शासक को उचित सम्मान देंगे। जनता को अपने शासकों से यह पूछने का अधिकार है कि वे जो कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं और यदि ऐसा लगता है कि चुनी हुई सरकार कुछ गलत कर रही है, तो इसके खिलाफ आवाज उठाने का पूरा अधिकार जनता को है। सच कहें तो इस तरह की निगरानी रखना जनता का अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी है। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाना जरूरी है कि जनतांत्रिक व्यवस्था में निर्वाचित शासक राजा नहीं होता, और न ही जनता प्रजा होती है।

जनता का यही अधिकार और कर्तव्य उसे चौकीदार की भूमिका निभाने का दायित्व भी देता है। इस चौकीदार से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी चुनी हुई सरकार के काम-काज पर नजर रखेगा और यदि कुछ गलत हो रहा है तो न केवल उसे उजागर करेगा, बल्कि गलत के खिलाफ आवाज भी उठायेगा- विरोध करना, गलत के खिलाफ प्रदर्शन करना हर जागरूक नागरिक का अधिकार है। इस अधिकार की रक्षा जनतांत्रिक व्यवस्था में जुड़ी सभी संस्थाओं, जिसमें पुलिस प्रमुख है, का कर्तव्य है। पर जब निर्वाचित प्रतिनिधि स्वयं को राजा समझने लगे और पुलिस यह समझने लगे कि वह जनता की नहीं, सरकार की सेवक है तो इसे जनतांत्रिक मूल्यों और आदर्शों के प्रतिकूल ही माना जायेगा। लेकिन, क्या ऐसा होता है? दुर्भाग्य से इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक है। हाल ही में यह सवाल मुंबई उच्च न्यायालय के एक कर्तव्यनिष्ठ न्यायाधीश ने उठाया था और स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि 'नागरिकों को मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री का सेवक समझना किसी भी दृष्टि से सही नहीं कहा जा सकता।'

न्यायमूर्ति माधव जामदार एक नागरिक को तड़ीपार किये जाने के आदेश को चुनौती देने वाले मामले में टिप्पणी कर रहे थे। नागरिक का अपराध यह था कि उसने सरकार के काम की आलोचना की थी, सरकारी आदेश के विरोध में प्रदर्शन किया था। न्यायमूर्ति ने पुलिस की इस कार्रवाई की तीव्र आलोचना करते हुए जनतंत्र में नागरिक के अधिकारों का हवाला दिया और कड़े शब्दों में कहा, 'यह क्या चल रहा है, सारे नागरिकों को भारत सरकार का गुलाम बनाया जा रहा है... ताकि वे विरोध-प्रदर्शन भी न कर सकें!' जनतांत्रिक व्यवस्था में नागरिक के पास सबसे महत्वपूर्ण ताकतवर हथियार यही विरोध-प्रदर्शन करना है और उम्मीद की जाती है कि व्यवस्था नागरिक के इस अधिकार के प्रति सम्मान का भाव रखेगी। आजादी की लड़ाई के दौरान ही महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के माध्यम से देश की जनता को यह अहसास करा दिया था कि आने वाले भारत में नागरिक के पास यही एक कारगर हथियार होगा। संविधान में अभिव्यक्ति की आजादी के इस अधिकार को बहुत ही स्पष्ट रूप से समझा दिया गया है। सरकार की रीति-नीति के विरुद्ध आवाज उठाना नागरिक का अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी है। जब कोई सरकार नागरिक के इस अधिकार पर अंकुश लगाने का प्रयास करती है तो वह लोकतंत्र को सीमित करने की ही कोशिश समझी जानी चाहिए। इन दिनों देश में 'कॉकरोच पार्टी' का आंदोलन चल रहा है। राजधानी दिल्ली में जंतर-मंतर पर देश के युवा अपनी मांगों के समर्थन में पिछले एक पखवाड़े से विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। वे 'नीट' की परीक्षा में हुई धांधली के विरोध में शिक्षा मंत्री को दोषी मानते हैं और इसीलिए उनके

इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। युवाओं के इस आंदोलन में जनतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करने वाले लोग उन्हें समर्थन भी दे रहे हैं। सामाजिक कार्यकर्ता और नागरिक अधिकारों की रक्षा के प्रति लगातार सजग रहने वाले योगेंद्र यादव भी कॉकरोच पार्टी के इस प्रदर्शन का समर्थन करने पहुंचे थे।

अपने भाषण में उन्होंने लगभग पंद्रह साल पहले इसी जगह हुए भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन का हवाला देते हुए एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने बताया कि तब भी शुरुआती दौर में आंदोलनकारियों की संख्या तो लगभग आज जैसी ही थी, पर तब जंतर मंतर का यह प्रदर्शन स्थल इतना छोटा नहीं था। उन्होंने कहा, 'जंतर-मंतर अब छोटा हो गया है' और यह छोटा होना एक मैदान का क्षेत्रफल कम होना नहीं है, 'हमारा लोकतंत्र सिकुड़ता जा रहा है।' हमारे लोकतंत्र के सिकुड़ने की यह बात हल्के में लिए जाने की बात नहीं है।

सिंधु की धारा में मौन सिसकी की आहट

जयसिंह रावत

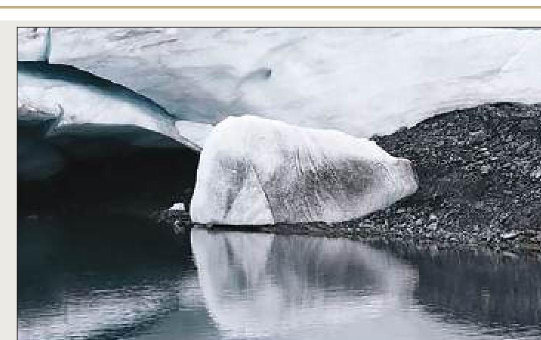

अमरनाथ यात्रा इस समय अपने चरम पर है, लेकिन यात्रा के पहले ही हफ्ते में बर्फानी शिवलिंग के 60 प्रतिशत तक गल जाने के कारण श्रद्धालुओं को भारी निराशा का सामना करना पड़ा है। पवित्र बर्फीले शिवलिंग के नियत समय से पहले गलने की आवृत्ति और तीव्रता पिछले कुछ सालों में अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई है। वास्तव में, यह संकट केवल बर्फानी बाबा तक सीमित नहीं है, बल्कि समूचे सिंधु नदी के जल संभरण (कैचमेंट) क्षेत्र में गहराई से पैर पसार चुका है। पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की अत्यधिक भीड़, भारी निर्माण कार्यों से उड़ते धूल के गुबार और लाखों की संख्या में दौड़ते वाहनों के प्रदूषण ने इस ऐतिहासिक नदी के अस्तित्व को ही गंभीर संकट में डाल दिया है।

सिंधु नदी, जिसने 'हिंदुस्तान' और 'इंडिया' को वैश्विक पहचान दी और 'सिंधु घाटी सभ्यता' को जन्म दिया, आज अपने अस्तित्व के सबसे गंभीर संकट में है। एशिया की यह जीवनदायिनी नदी करोड़ों लोगों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा का आधार है। करीब 11 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला यह बेसिन 'थर्ड पोल' का हिस्सा है। यहां के ग्लेशियर, जो सिंधु के 50 प्रतिशत जल प्रवाह का स्रोत हैं, तेजी से सिकुड़ रहे हैं। आईसीआईएमओडी की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2000 के बाद इस क्षेत्र में ग्लेशियरों के पिघलने की गति लगभग दोगुनी हो गई है। वर्ष 1990 से 2020 के बीच इस पूरे क्षेत्र ने अपने ग्लेशियर क्षेत्रफल का लगभग 12 प्रतिशत हिस्सा खो दिया। वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी के वैज्ञानिकों का कहना है कि अब सर्दियों की भारी बर्फबारी का समय बदल रहा है। पहले जो हिमपात दिसंबर से फरवरी के बीच होता था, उसका बड़ा हिस्सा अब मार्च और अप्रैल में हो रहा है, जिससे ग्लेशियरों का प्राकृतिक पुनर्भरण लगातार कमजोर हो रहा है। सोनमर्ग से जोजिला दर्रे तक ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरी सिंध घाटी धूल और धुएं की एक घनी चादर में लिपट गई हो। पर्यटकों के वाहनों की लंबी कतारें, रसद में जुटे बेतहाशा ट्रक, सैन्य बलों के काफिले और मेगा सड़क तथा सुरंग निर्माण परियोजनाओं में लगे भारी अर्थ-मूविंग वाहन प्रतिदिन हजारों की संख्या में इस अत्यंत संकरी और संवेदनशील घाटी से गुजरते हैं।

इन वाहनों के पीछे उठते धूल के गुबार और डीजल का काला धुआं हवा के साथ सीधे ऊपर सदियों पुराने हिमनदों की ओर बढ़ते साफ दिखाई देते हैं। सोनमर्ग के निकटवर्ती थजीवास, मचोई और बालटाल के ऊपरी क्षेत्रों में मौजूद ग्लेशियरों की उजली बर्फीली सतह पर मटमैली परत नंगी आंखों से देखी जा सकती है। कदम-कदम पर होने वाले भूस्खलन वाहनों की आवाजाही के दौरान इस धूल को और बढ़ाते हैं। विज्ञान का सीधा-सा नियम है कि स्वच्छ, सफेद बर्फ सूर्य के विकिरण का लगभग 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा वापस अंतरिक्ष में परावर्तित कर देती है, जिसे अल्बीडो प्रभाव कहा जाता है। लेकिन जब इसी बर्फ की सतह पर धूल, डीजल वाहनों की कालिख या निर्माण कार्यों से उड़ने वाला ब्लैक कार्बन जम जाता है, तो बर्फ का परावर्तन गुण तेजी से घट जाता है।

गहरे रंग की यह परत सूर्य की अधिक ऊष्मा को अवशोषित करने लगती है, जिससे बर्फ के पिघलने की गति सामान्य से 30 से 40 प्रतिशत तक अधिक तेज हो जाती है। कश्मीर की सिंध नदी, जो आगे चलकर झेलम और अंततः सिंधु प्रणाली का प्रमुख हिस्सा बनती है, का उद्गम इन्हीं क्षेत्रों में है। सिंधु बेसिन के ऊपरी क्षेत्रों, विशेषकर लद्दाख, सोनमर्ग और अमरनाथ यात्रा मार्ग में अनियंत्रित पर्यटन ने पर्यावरण पर दबाव डाल दिया है। लद्दाख जैसे शीत मरुस्थल की वहन क्षमता अत्यंत सीमित है, लेकिन वहां प्रतिवर्ष लगभग 5.5 से 6 लाख पर्यटक पहुंच रहे हैं, जबकि वहां की स्थायी आबादी मात्र तीन लाख के आसपास है। पर्यटन के चरम मौसम में प्रतिदिन हजारों डीजल वाहन संवेदनशील क्षेत्रों तक पहुंचते हैं, जिससे न केवल ठोस कचरे और प्लास्टिक का संकट बड़ा हुआ है, बल्कि जल स्रोतों पर भी दबाव पड़ रहा है। जिन क्षेत्रों में कभी प्राकृतिक झरनों का जल पूरे वर्ष उपलब्ध रहता था, वहां अब गर्मियों में पानी का संकट दिखाई देने लगा है। अमरनाथ यात्रा निस्संदेह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा है, और सामरिक सुरक्षा के लिए ऑल-वेदर कनेक्टिविटी सुरंगें भी राष्ट्र की प्राथमिकता हैं।

लेकिन क्या हिमालय जैसे अत्यंत संवेदनशील और युवा पहाड़ की धारण क्षमता का आकलन किए बिना यह सब अनियंत्रित रूप से होना चाहिए? वैज्ञानिक अब सिंधु नदी के भविष्य को लेकर 'पीक वाटर' की अवधारणा की चर्चा कर रहे हैं। शुरुआती दशकों में तेजी से पिघलने के कारण नदी में जल प्रवाह बढ़ता हुआ दिखाई देगा, जिससे बाढ़ की घटनाएं बढ़ेंगी। लेकिन जैसे-जैसे हिमनद पूरी तरह सिकुड़ जाएंगे, जल प्रवाह स्थायी रूप से घटने लगेगा। इसका सबसे अधिक प्रभाव सिंचाई, पेयजल और खाद्य सुरक्षा पर पड़ेगा। सिंधु बेसिन पहले ही विश्व के सर्वाधिक जल तनाव वाले नदी तंत्रों में शामिल है, और आगामी दशकों में यह संकट करोड़ों लोगों के अस्तित्व को दांव पर लगा सकता है। संयुक्त राष्ट्र ने इस संकट की गंभीरता को देखते हुए वर्ष 2025-2034 को 'क्रायोस्फेरिक साइंसेज के लिए कार्रवाई का दशक' घोषित किया है। सिंधु के संरक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर वैज्ञानिक आधार पर पर्यटन प्रबंधन, केवल भारत स्टेज-6 या इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रवेश की अनुमति, निर्माण मलबे का वैज्ञानिक निस्तारण और प्रत्येक संवेदनशील क्षेत्र की वहन क्षमता के अनुरूप आगंतुकों की सीमा तय करना आवश्यक है।

गर्मी में शरीर को राहत पहुंचाता है सत्तू से बना ड्रिंक

बारिश में होने वाली तेज गर्मी और चिलचिलाती धूप की वजह से हर कोई परेशान है। कई शहरों में तो लोगों का काफी बुरा हाल है। आलम ये है कि तेज धूप के कारण लोगों का घर से निकलना मुश्किल हो रहा है। ऐसे में कई तरीके अपनाकर लोग गर्मी से राहत पाने की कोशिश कर रहे हैं। गर्मी की वजह से शरीर पर कई तरह की परेशानियां सामने आने लगती हैं, जैसे सनबर्न और टैनिंग। इसका इलाज तो हम स्किन केयर करके कर ही लेते हैं। इसके साथ ही गर्मी में शरीर काफी डिहाइड्रेट भी होने लगता है। जिसके लिए ऐसे खान-पान की जरूरत होती है, जो शरीर में होने वाली पानी की कमी को पूरी करें। ऐसे में गर्मियों में सत्तू का ड्रिंक पीना काफी फायदेमंद होता है।

सामग्री

चने का सत्तू - आधा कप, पोदीना के पत्ते -10, नींबू - आधा, हरी मिर्च - आधी, भुना जीरा - आधा छोटी चम्मच, काला नमक - आधा छोटी चम्मच, सादा नमक - स्वादानुसार।

फायदा

तेज गर्मी में धूप और लू से बचने के लिए सत्तू का सेवन किया जाता है। अगर आप गर्मी में रोजाना इसका सेवन करेंगे तो पहले तो आपको जल्दी भूख नहीं लगेगी। इसके साथ ही ये आपके शरीर को उर्जावान रखता है। सत्तू का सेवन पेट को ठंडक पहुंचाने में मददगार है।

विधि

गर्मी के दिनों में यूपी और बिहार में सत्तू का सेवन एक स्पेशल ड्रिंक के रूप में किया जाता है। गर्मी में सत्तू बनाने के लिए सबसे पहले आप पुदीने के पत्तों को अच्छे से धोकर इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। इसके बाद अब आप हरी मिर्च और प्याज को बेहद ही महीन-महीन काट लें। अब इसके बाद एक कटोरे में ठंडा पानी लें और इसमें थोड़ा-थोड़ा सत्तू मिलाना शुरू करें। सत्तू को इतना घोलें कि इसमें गांठ ना रह जाए। सत्तू को अच्छे से घुल जाने के बाद इसमें भुना जीरा, काला नमक, सादा नमक डालकर अच्छे से मिलाएं। आखिर में इसमें पुदीना और नींबू का रस डालें। बस आपका ये ड्रिंक तैयार है। अब इसे गिलास में सर्व करें। इसमें ऊपर से बर्फ डालना कतई ना भूलें।

घर पर बनाएं प्याज का अचार

गर्मियों के मौसम में कुछ भी खाने से पहले सोचना पड़ता है। कई बार हल्का सा भी ज्यादा खाने से गर्मियों फूड प्वाइजिंग की समस्या देखने को मिलती है। इस मौसम में डिहाईड्रेशन और थकावट होना बेहद आम बात है। ऐसे में गर्मी के इस मौसम में अपना ख्याल रखना बेहद जरूरी होता है। गर्मियों के मौसम में दिन के समय इतनी तेज धूल भरी आंधी और गर्म हवाएं चलती हैं, कि घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। गर्मी की वजह से कई बार लू लग जाती है तो तबियत बिगड़ने लगती है। ऐसे में डॉक्टर्स सलाह देते हैं कि, खाने में ऐसी चीजों का सेवन किया जाए, जिससे लू लगने की संभावना कम हो और शरीर हाईड्रेटेड रहे। दरअसल, गर्मी में प्याज खाने से शरीर को काफी ठंडक मिलती है तो अगर आप प्याज का सेवन अचार के रूप में करेंगे तो इससे खाने का स्वाद भी बढ़ जाएगा और शरीर को राहत भी मिलेगी।

गर्मी से मिलती है राहत

सामग्री

प्याज, नमक, हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, अमचूर, सौंफ, कलौंजी, मेथी दाना, जीरा, करी पत्ता, खड़ी लाल मिर्च, गुड़।

विधि

ये प्याज का अचार बनाना बेहद आसान है। इसके लिए आपको सबसे पहले छोटे प्याज को छांट कर अलग करके साफ करना है। इसके बाद इन प्याज में इस तरह से कट लगाएं कि ये अलग ना हो। प्याज काटने के बाद अब नमक, हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, अमचूर, सौंफ और कलौंजी मिलाकर इसका मसाला तैयार कर लें। इसे तैयार करने के बाद प्याज के बीच में इस मिलाए हुए मसाले को अच्छे से भर लें। इसके बाद एक पैन में तेल गर्म करें और उसमें मेथी दाना, जीरा, करी पत्ता, खड़ी लाल मिर्च डालकर अच्छे से भूनें। मसाले भुन जाने के बाद इसमें प्याज डालें। जब ये सब पक जाए तो इसमें एक चौथाई कप पानी डालें और साथ में थोड़ा सा गुड़ भी डालें। इसे भी अब पांच से छह मिनट कर पकाएं। बस अब आपका प्याज का अचार तैयार है। इसे खाने के साथ परोसें और खाने के स्वाद को दोगुना करें।

हंसना मना है

बुढ़िया (डॉक्टर से)-दांत निकाल दीजिए। डॉक्टर-मुंह खोलो। बुढ़िया-लो खोल दिया। डॉक्टर-थोड़ा और खोलो। बुढ़िया ने थोड़ा मुंह और खोल दिया। डॉक्टर-थोड़ा और खोलो। बुढ़िया-क्या मुंह में बैठकर ही दांत निकालने का विचार है?

पार्टी में एक सज्जन ने पास खड़े इंसान से कहा-'औरत भी अजीब वस्तु है। कुछ देर पहले तक वह सामने वाली स्त्री मुझे देख मुस्करा रही थी और अब ऐसे घूर रही है, जैसे कच्चा ही चबा जाएगी। जी हां, मेरी पत्नी का मूड इसी तरह बदलता रहता है। नजदीक खड़े इंसान ने उत्तर दिया।

एक दोस्त ने दूसरे दोस्त से पूछा-'यार तुम्हारी बीबी काफी खूबसूरत एवं सुशील है, फिर आप उससे तलाक क्यों लेना चाहते हो? दूसरे दोस्त ने जवाब दिया-भाई, जो जूता मैंने पहना है, वह भी काफी खूबसूरत दिखता है, पर केवल मैं ही जानता हूं कि ये मुझे काटता भी है, ये आप तो नहीं जानते।'

कहानी | वृन्दावन की चीटियां

एक संत एक बार वृन्दावन गए वहां कुछ दिन घूमे फिरे दर्शन किए जब वापस लौटने लगे तो सोचा प्रसाद लेता चलूं। संत ने प्रसाद चढ़ाया और आश्रम में आकर सो गए। सुबह ट्रेन से चले। संत ने सोचा, अभी पटना पहुंचने में समय लगेगा भूख लग रही है, मुगलसराय में ट्रेन रूकी तो संत ने लड्डू खाने के लिए डिब्बा खोला तो चींटे लगे हुए थे, उन्होंने चींटों को हटाकर एक दो लड्डू खा लिए। बाकी प्रसाद बांटने के लिए छोड़ दिए। फिर संत को लड्डूओं से अधिक उन चींटों की चिंता सताने लगी। सोचने लगे, ये चींटें कितने भाग्यशाली थे, इनका जन्म वृन्दावन में हुआ था। अब इतनी दूर से पता नहीं कितने दिन या कितने जन्म लग जाएंगे इनको वापस पहुंचने में! मैंने कितना बड़ा पाप कर दिया, इनका वृन्दावन छुड़वा दिया। नहीं मुझे वापस जाना होगा। फिर डिब्बे को लेकर वृन्दावन की ट्रेन पकड़ ली। उसी मिठाई की दूकान के पास गए डिब्बा धरती पर रखा और हाथ जोड़ लिए। मेरे भाग्य में नहीं कि तेरे ब्रज में रह सकूं तो मुझे कोई अधिकार भी नहीं कि जिसके भाग्य में ब्रज की धूल लिखी है उसे दूर कर सकूं। दूकानदार ने देखा तो बोला महाराज आप दूसरी मिठाई तौलवा लो। संत ने कहा कि भईया मिठाई में कोई कमी नहीं थी। इन हाथों से पाप होते होते रह गया उसी का प्रायश्चित कर रहा हूं। दुकानदार ने जब सारी बात जानी तो उस संत के पैरों के पास बैठ गया, भावुक हो गया। इधर दुकानदार रो रहा था! उधर संत की आंखें गीली हो रही थीं। बात भाव की है, बात उस निर्मल मन की है, बात ब्रज की है, बात मेरे वृन्दावन की है। बूझो तो बहुत कुछ है, नहीं तो बस पागलपन है, बस एक कहानी।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष परिवार की चिंता रहेगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। थकान रहेगी। पिता का स्वास्थ्य संतोष देगा।

वृषभ धनागम होगा। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। रोजगार मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। जल्दबाजी न करें। नौकरी में ऐच्छिक स्थानांतरण एवं पदोन्नति के योग हैं।

मिथुन स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें। संतान को अपने कार्यों में सफलता मिल सकेगी।

कर्क व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नेत्र पीड़ा हो सकती है। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। शारीरिक कष्ट से बाधा संभव है। विवाद न करें। शत्रु से सतर्क रहें।

सिंह प्रयास सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। सुख के साधन जुटेंगे। शत्रु परास्त होंगे। सुखवृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होगी।

कन्या वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। मान बढ़ेगा। धनार्जन होगा। थकान रहेगी। रचनात्मक कार्य में मन लगेगा। मानसिक बेचैनी रहेगी।

तुला बेरोजगारी दूर होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। कामकाज की जिज्ञासा बढ़ेगी। समय का सदुपयोग होगा।

वृश्चिक फालतू खर्च होगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। पुराना रोग उभर सकता है। कुसंगति से हानि होगी। अनसोचे कार्य होंगे। दांपत्य जीवन में मनमुटाव हो सकता है।

धनु पुराना रोग उभर सकता है। बेचैनी रहेगी। प्रयास सफल रहेंगे। योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। व्यापारिक गोपनीयता भंग न करें।

मकर नए अनुबंध हो सकते हैं। व्यवसाय ठीक चलेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। पारिवारिक तनाव से मन परेशान रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुम्भ धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। कानूनी अड़चन दूर होगी। धनार्जन होगा। प्रसन्नता रहेगी। यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं। मनोरंजन के अवसर उपलब्ध होंगे।

मीन व्यापार में लाभ होने के योग हैं। धार्मिक कामों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी से विवाद हो सकता है। अपनी स्थिति, योग्यता के अनुरूप कार्य करें।

बॉलीवुड | मन की बात

गुटबाजी के चलते ए लिस्ट स्टार मैं बन नहीं पाया : जावेद जाफरी

जावेद जाफरी अपनी एक्टिंग के साथ-साथ अपनी कॉमेडी और डांस से भी फैंस के बीच चर्चा में रहते हैं। हालांकि मल्टीटैलेंटेड होने के बावजूद जावेद जाफरी बड़े एक्टर नहीं बन पाए और अब उन्होंने ऐसा न हो पाने की वजह बताई है। साथ ही सलमान खान को लेकर एक उदाहरण भी दिया। हाल ही में जावेद जाफरी ने स्क्रीन को एक इंटरव्यू दिया। इस दौरान उनसे पूछा गया था कि 90 के दशक में काफी पॉपुलैरिटी हासिल करने के बाद भी क्यों वो कभी-लिस्ट एक्टर्स की लिस्ट में शामिल नहीं हुए? इस पर जावेद कहते हैं, ये इस बात पर डिपेंड करता है कि आपको किस तरह से दिखाया या पेश किया जाता है और इसमें पीआर की भी भूमिका होती है। इंडस्ट्री का खुद का ही अपना एक जाल है। कई बार आपको लेकर निगेटिव खबरें भी फैलती हैं और ऐसे में आपकी जिम्मेदारी बन जाती है कि आप खुद को लेकर फैली निगेटिव बातों को रोकें और लोगों तक पॉजिटिविटी पहुंचाए। जावेद जाफरी ने कहा कि कई मामलों में वो फेल हो गए। उन्होंने कहा, सक्सेस से बड़ी कोई चीज नहीं होती है। मैं किसी ग्रुप का हिस्सा नहीं था। जब आपकी फिल्म हिट है तो कोई बहस नहीं होती है। जब सलमान की पहली फिल्म बीवी हो तो ऐसी (1988) आई थी तो उन्हें लोगों ने नकार दिया था, लेकिन इसके बाद मैंने प्यार किया (1989) आई और हर कोई उनके पीछे जाने लगा। ऐसा सिर्फ सक्सेस के कारण हुआ था। उन्होंने आगे कहा मुझे कभी इस तरह की बड़ी हिट या सफलता हासिल नहीं हुई। जावेद ने आगे अपनी डेब्यू फिल्म मेरी जंग (1985) को लेकर बात की। इसमें उन्होंने विलेन का किरदार निभाया था और कहा कि उसके बाद सभी मुझे विलेन के नरजिए से ही देखने लगे थे।

दूसरी बार मां बनेंगी दीपिका पादुकोण

दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह ने अप्रैल 2026 में अपनी दूसरी प्रेगनेंसी का ऐलान किया था, जिससे फैन्स के बीच खुशी की लहर दौड़ गई थी। फैन्स, दोस्तों और परिवार की तरफ से प्यार और बधाइयों की झड़ी लग गई थी, क्योंकि कपल फिर से माता-पिता बनने की तैयारी कर रहा है। अब दीपिका ने अपनी दूसरी प्रेग्नेंसी की झलक शेयर की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक अपडेट शेयर किया। एक्ट्रेस ने बताया कि वो अपने तीसरे ट्राइमेस्टर में बच्चा आने से पहले कैसे समय बिता रही हैं।

शनिवार, 11 जुलाई को दीपिका पादुकोण ने सोशल मीडिया पर अपने तीसरे ट्राइमेस्टर की रियलिटी के बारे में एक हल्का-फुल्का अपडेट शेयर किया। एक्ट्रेस ने एक मजेदार रील पोस्ट की, जो प्रेग्नेंसी में होने वाले अनुभव को बिल्कुल सही ढंग से दिखाती है। वीडियो में एक गर्भवती महिला बाथरूम की तरफ झुककर चलती हुई दिख रही है, जो तीसरे ट्राइमेस्टर की एक रिलेटेबल मोमेंट है। दीपिका ने पोस्ट के साथ केवल उल्टा स्माइली इमोजी लगाया और रील ने सब कुछ बयां कर दिया।

यह पोस्ट जल्दी ही फैन्स का ध्यान खींचने लगी और लोग एक्ट्रेस से उनकी प्रेग्नेंसी की अपडेट पाकर खुश हो गए। एक फैन ने लिखा, काश मैं अपनी क्वीन के लिए वहां हो पाती। दूसरे फैन ने लिखा, दीपिका पादुकोण ने अपने तीसरे ट्राइमेस्टर में बाथरूम की तरफ चलने की कहानी शेयर की। कई लोग अपने आइडल के लिए रेड हार्ट इमोजी छोड़ते भी दिखे।

बता दें कि धुरंधर: द रिवेंज की जबरदस्त सफलता के बाद अप्रैल में रणवीर और दीपिका ने दूसरी प्रेग्नेंसी की अनाउंसमेंट की। उन्होंने इंस्टाग्राम पर ये खबर सादगी और भावुकता से शेयर की थी। तस्वीर में उनकी बेटी दुआ सिंह पादुकोण को देखा जा सकता था, जो प्रेग्नेंसी टेस्ट पकड़कर खड़ी थी। कैप्शन में उन्होंने बुरी नजर से बचाने वाले इमोजी लगाए थे। कुछ ही देर में उनकी पोस्ट पर खुशियों भरे कमेंट्स आने लगे।

दीपिका पादुकोण ने 8 सितंबर 2024 को अपनी पहली बेबी गर्ल दुआ का वेलकम किया था। अब वो और रणवीर दूसरे बच्चे का वेलकम करने के लिए तैयार हैं।

एक बार फिर बड़े पर्दे पर लव स्टोरी लेकर आ रहे हैं आदित्य रॉय कपूर

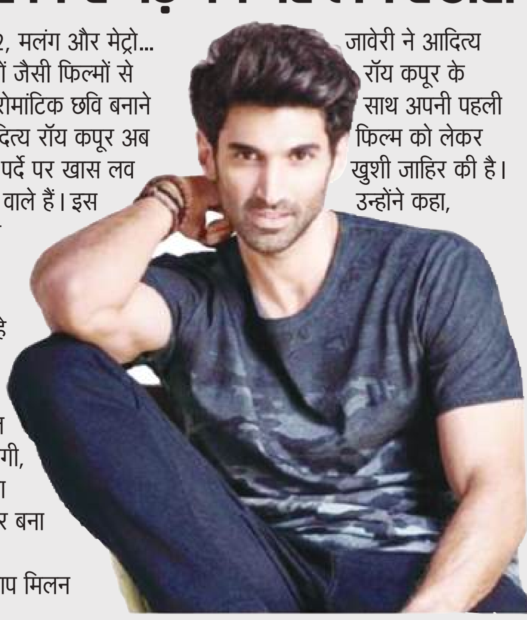

आशिकी 2, मलंग और मेट्रो... इन दिनों जैसी फिल्मों से अपनी रोमांटिक छवि बनाने वाले अभिनेता आदित्य रॉय कपूर अब एक बार फिर बड़े पर्दे पर खास लव स्टोरी लेकर आने वाले हैं। इस बार वह पहली बार निर्देशक मिलाप मिलन जावेरी के साथ हाथ मिला रहे हैं। दोनों की यह फिल्म रोमांस, एक्शन और संगीत का दमदार मेल होगी, जिसे निर्माता भूषण कुमार बड़े स्तर पर बना रहे हैं।

निर्देशक मिलाप मिलन जावेरी ने आदित्य रॉय कपूर के साथ अपनी पहली फिल्म को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा, आदित्य प्यार को बेहद गहराई के साथ पर्दे पर उतारते हैं। आशिकी 2 के बाद से दर्शकों ने उन्हें जुनून और टूटे दिल की कहानियों में खूब पसंद किया है। इस नई फिल्म का किरदार कई परतों वाला होगा। मुझे नहीं लगता कि इस सफर को उनसे बेहतर कोई और निभा सकता था। वहीं, निर्माता भूषण कुमार ने आदित्य के साथ अपनी पुरानी साझेदारी को याद करते हुए कहा, आदित्य के साथ हमारा रिश्ता कई सालों पुराना है और हमने साथ मिलकर ऐसी फिल्में दी हैं जिन्हें दर्शक आज भी पसंद करते हैं। आशिकी 2 से लेकर मेट्रो... इन दिनों तक हर फिल्म हमारे लिए खास रही है। हमारे बीच शानदार क्रिएटिव तालमेल है और मुझे खुशी है कि हम एक बार फिर एक ऐसी कहानी के लिए साथ आ रहे हैं, जो भावनात्मक और बड़े पैमाने पर बनाई जाएगी।

फिल्म की शूटिंग इसी साल के आखिर में शुरू होने की तैयारी है। इसके बाद पोस्ट-प्रोडक्शन का काम पूरा कर इसे साल 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। फिलहाल फिल्म की बाकी स्टारकास्ट और टाइटल का खुलासा नहीं किया गया है लेकिन मेकर्स का कहना है कि आने वाले समय में इससे जुड़ी और जानकारियां साझा की जाएंगी।

फिल्म की घोषणा करते हुए मिलाप मिलन जावेरी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर भी एक खास पोस्ट शेयर किया था। उन्होंने लिखा, इस बार आशिकी पूरी दीवानियत से होगी।

अजब-गजब

सब्जियों की तरह मिलते हैं पैसे, थैलों में ले जाते हैं लोग!

दुनिया का इकलौता देश, जहां लगती है नोटों की मार्केट

आज के समय में दुनिया के ज्यादातर देशों में डिजिटल पेमेंट तेजी से बढ़ रहा है। भारत में भी यूपीआई ने नकद लेन-देन की जरूरत काफी कम कर दी है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया में एक ऐसा देश भी है, जहां लोग डिजिटल पेमेंट इसलिए करते हैं क्योंकि नकद लेकर चलना लगभग नामुमकिन है? यहां बाजारों में फल-सब्जियों से ज्यादा नोटों के बंडल नजर आते हैं। छोटी-सी खरीदारी के लिए भी लोगों को थैले भरकर नोट ले जाने पड़ते हैं। दरअसल, हम बात कर रहे हैं सोमालीलैंड की, जो उत्तरी अफ्रीका में अदन की खाड़ी के पास स्थित है। साल 1991 में इस क्षेत्र ने खुद को सोमालिया से अलग घोषित कर दिया था। हालांकि, आज भी संयुक्त राष्ट्र समेत दुनिया के अधिकांश देशों ने इसे स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता नहीं दी है। करीब 40 लाख की आबादी वाला यह क्षेत्र खुद को एक स्वतंत्र गणराज्य मानता है और अपनी सरकार तथा प्रशासन भी खुद ही चलाता है।

सोमालीलैंड की आधिकारिक मुद्रा सोमालीलैंड शिलिंग है। लेकिन इसकी कीमत इतनी कम है कि एक अमेरिकी डॉलर के बदले करीब 9 हजार शिलिंग देने पड़ते हैं। यहां 500 और 1000 शिलिंग के नोट सबसे ज्यादा चलते हैं। यही वजह है कि अगर किसी व्यक्ति को रोजमर्रा के लिए भी कोई चीज भी खरीदनी होती है, तो उसे नोटों का बड़ा बंडल साथ लेकर जाना पड़ता है। सोमालीलैंड के बाजारों का सबसे अनोखा नजारा यही है। यहां फल और सब्जियों से ज्यादा नोटों के ढेर दिखाई देते हैं। अगर किसी को एक सिगरेट खरीदनी हो, तो भी 500 या 1000 शिलिंग के कई नोट देने पड़ सकते हैं। वहीं, एक थैला भर सब्जी खरीदने के लिए लोगों को नोटों से भरा झोला लेकर बाजार जाना पड़ता है। अगर कोई महंगे गहने या बड़ी खरीदारी करना चाहे, तो नोटों के बंडल ट्रक में भी लेकर जाना पड़ सकता है। इतनी कम मूल्य वाली करेंसी के कारण नकद ले जाना लोगों के लिए बड़ी परेशानी बन गया है। इसी वजह से सोमालीलैंड में मोबाइल पेमेंट और डिजिटल लेन-देन तेजी से बढ़ा है। यहां लोग छोटी-सी खरीदारी से लेकर बड़ी रकम तक का भुगतान मोबाइल से करना पसंद करते हैं। यहां तक कि कई भिखारी भी नकद की बजाय मोबाइल पेमेंट स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि आज सोमालीलैंड का बड़ा हिस्सा कैशलेस ट्रांजेक्शन पर निर्भर हो चुका है।

सोमालीलैंड का लगभग आधा हिस्सा रेगिस्तानी है, जबकि बाकी इलाका अक्सर सूखे की मार झेलता रहता है। यहां कृषि सीमित है और रोजगार के अवसर भी कम हैं। देश का सबसे बड़ा निर्यात ऊंटों का है। इसके अलावा लोग मछली पालन और छोटे-मोटे व्यवसायों से अपना जीवन काटते हैं। बावजूद इसके, यहां की अर्थव्यवस्था अभी भी काफी कमजोर मानी जाती है। सोमालीलैंड की अर्थव्यवस्था काफी हद तक पर्यटन पर भी निर्भर करती है। यहां समुद्री तट, रहस्यमयी गुफाएं और प्राकृतिक इलाके शोधकर्ताओं और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इतिहास, भूगोल और पुरातत्व से जुड़े विशेषज्ञ भी यहां रिसर्च के लिए आते रहते हैं।

ये है दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन यह बस 38 महीने में बनकर हुआ तैयार

जब भी दुनिया में कोई बड़ा पुल, गगनचुंबी इमारत या अत्याधुनिक रेलवे स्टेशन बनाने की बात आती है, तो सरकारी विभागों की मंजूरियों, कागजी कारवाइयों और बजट के चक्कर में ही सालों-साल बीत जाते हैं। कई देशों में तो एक साधारण सी सड़क या छोटा सा स्टेशन बनने में ही एक दशक का समय लग जाता है। लेकिन जब बात चीन की हो, तो वहां की रफ्तार और इंजीनियरिंग के अनोखे कारनामे पूरी दुनिया के होश उड़ा देते हैं। जरा सोचिए, एक ऐसा इलाका जो पूरी तरह ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों और चट्टानों से घिरा हो, जहां पैर रखने तक की सीधी जगह न हो, वहां चीन ने एक पूरे के पूरे पहाड़ को बारूद से उड़ाकर दुनिया का सबसे विशालकाय रेलवे स्टेशन खड़ा कर दिया! यह सुनने में भले ही किसी साइंस-फिक्शन फिल्म का कोई आलीशान सेट लगे, लेकिन चीन ने इसे हकीकत में बदल दिखाया है। इस मेगाप्रोजेक्ट को देखकर आज अमेरिका और यूरोप के बड़े-बड़े आर्किटेक्ट भी हैरान हैं कि आखिर कोई देश इतनी तेजी से कुदरत का नक्शा कैसे बदल सकता है। यह आधुनिक दुनिया का अजूबा चीन के दक्षिण-पश्चिम में स्थित चोंगकिंग प्रांत में बनकर तैयार हुआ है, जिसे चोंगकिंग ईस्ट रेलवे स्टेशन का नाम दिया गया है। क्षेत्रफल के मामले में इसे आधिकारिक तौर पर दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन घोषित किया जा चुका है। यह स्टेशन कुल 1.22 मिलियन वर्ग मीटर यानी करीब 12 लाख 20 हजार वर्ग मीटर के विशाल इलाके में फैला हुआ है। अगर इसकी तुलना करें, तो यह स्टेशन फुटबॉल के 170 मैदानों के बराबर बड़ा है! इतना ही नहीं, यह न्यूयॉर्क के मशहूर ग्रैंड सेंट्रल स्टेशन से छह गुना और यूरोप के सबसे बड़े स्टेशन से पूरे पंद्रह गुना बड़ा है। इसका आकार वेटिकन सिटी जैसे छोटे देश से भी दोगुने से ज्यादा है। इस आठ मंजिला आलीशान स्टेशन के ऊपर 16500 टन वजनी स्टील के पाइपों से बनी एक जादुई छत लगाई गई है, जो इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा देती है। स्टेशन की सबसे हैरान कर देने वाली बात यह है कि यह असल में एक ऊंचे पहाड़ के ऊपर स्थित है। चोंगकिंग शहर अपने पथरीले और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है, जिसे ऐसे किसी भी बड़े ट्रांसपोर्ट हब को बनाने के लिए सबसे खराब और नामुमकिन जगह माना जाता था। लेकिन जब आपके पास आधुनिक तकनीक, अटूट हौसला और मजदूरों की एक विशाल फौज हो, तो कोई भी पहाड़ रास्ता नहीं रोक सकता।

सैयद अली ने बदली ग्रामीणों की आर्थिक सोच

चेंजमेकर प्रोजेक्ट से दी बैंकिंग व वित्तीय साक्षरता

» अली की लखीमपुर खीरी के एक किसान से हुई बातचीत ने बदली सोच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जब अधिकांश छात्र बोर्ड परीक्षा और करियर की तैयारी में व्यस्त रहते हैं, उसी उम्र में लखनऊ के सैयद अली हुसैन रिजवी ने एक ऐसा अभियान शुरू किया जिसने हजारों ग्रामीण परिवारों की आर्थिक सोच बदलने का काम किया। महज कक्षा 12 के छात्र अली ने यह महसूस किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक समस्याओं की जड़ केवल जानकारी की कमी नहीं, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था पर भरोसे की कमी भी है। इसी सोच से उन्होंने चेंजमेकर प्रोजेक्ट की शुरुआत की। अली बताते हैं कि लखीमपुर खीरी के एक गांव में एक किसान से हुई बातचीत ने उनकी सोच बदल दी। किसान ने बताया कि वह 20 प्रतिशत ब्याज पर साहूकार से पैसा लेना पसंद करता है, क्योंकि बैंक तक पहुंचना, दस्तावेज जुटाना और समय निकालना उसके लिए संभव नहीं है। अली का मानना है कि यह किसान की मजबूरी थी, न कि उसकी गलती। यहीं से उन्होंने गांव-गांव जाकर लोगों को वित्तीय रूप से जागरूक करने का संकल्प लिया।

कक्षा 10 में शुरू किए गए चेंजमेकर प्रोजेक्ट के तहत अली ने उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में सीधे गांवों में जाकर वित्तीय साक्षरता कार्यशालाएं आयोजित कीं।

इन कार्यशालाओं में किसानों, मजदूरों और छोटे व्यापारियों को यह समझाया गया कि साहूकारों से महंगा कर्ज लेने के बजाय बैंकिंग सेवाओं का सही उपयोग कैसे किया जा सकता है। उन्होंने एफएलईएटी-फाईनेंसियल लिटरेसी एजूकेशन एंड ट्रेनिंग मॉडल तैयार किया, जिसके माध्यम से अब तक 20 से अधिक कार्यशालाओं के जरिए 15 हजार से अधिक परिवारों तक वित्तीय जागरूकता पहुंचाई जा चुकी है। मैदानी कार्यों के साथ-साथ अली ने द मनी क्लॉज नाम से एक डिजिटल प्लेटफॉर्म भी शुरू किया, जिसका उद्देश्य युवाओं को आसान भाषा में अर्थशास्त्र और वित्त की जानकारी देना है। इस प्लेटफॉर्म के आज 2.5 लाख से अधिक पाठक भारत और विदेशों में हैं। वहीं, इसका वित्तीय साक्षरता टूलकिट लगभग 7,500 लोगों तक पहुंच चुका है। यह मंच मौद्रिक नीति, पूंजी बाजार, माइक्रो फाइनेंस और व्यवहारिक अर्थशास्त्र जैसे विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है। इस वर्ष द मनी क्लॉज ने पहली बार भारत के बाहर नाइजीरिया में 150 से अधिक विद्यार्थियों के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यशाला आयोजित की। इस ऑनलाइन सत्र में अली ने लखनऊ से जुड़कर विद्यार्थियों से संवाद किया। अली का कहना है कि नाइजीरिया और भारत के गांवों की समस्याएं लगभग एक जैसी हैं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि वित्तीय बहिष्करण केवल स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक समस्या है।

जिस दिन लोग अपनी पहली आर्थिक गलती करने से पहले ही वित्तीय शिक्षा प्राप्त करने लगेंगे, उस दिन हमारा प्रयास सफल हो जायेगा : अली

सामाजिक कार्यों के साथ शैक्षणिक उपलब्धियां भी कमाल की

सामाजिक कार्यों के साथ-साथ अली की शैक्षणिक उपलब्धियां भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंन आईसीएसई बोर्ड परीक्षा में 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक-8 हासिल की। वह ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ के वाइस कैप्टन, डिबेट कैप्टन और अपने बैच में दूसरे स्थान पर हैं। हाल ही में उन्होंने इंडियन डिबेटिंग लीग वर्ल्ड इकोनॉमिक्स ब्रिटिश पार्लियामेंट्री डिबेट-26 में फाइनल बेस्ट स्पीकर का खिताब भी जीता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और रोजगार बाजार पर अली द्वारा लिखा गया शोधपत्र ऑक्सफोर्ड जनरल ऑफ स्टूडेंट स्कॉलरशिप में प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने बताया कि एआई के कारण रोजगार के स्वरूप में तेजी से बदलाव आ रहा है और केवल रोजगार के आंकड़ों से वास्तविक स्थिति का आकलन नहीं किया जा सकता। जब अली से पूछा गया कि अगले दस वर्षों में सफलता उनके लिए क्या होगी, तो उन्होंने कहा-जिस दिन लोग अपनी पहली आर्थिक गलती करने से पहले ही वित्तीय शिक्षा प्राप्त करने लगेंगे, उस दिन मुझे लगेगा कि हमारा प्रयास सफल हो गया।

जहां बैंक नहीं पहुंचते वहां पहुंचा चेंजमेकर प्रोजेक्ट

लखनऊ के सैयद अली हुसैन रिजवी ने गांव-गांव जाकर 15 हजार से अधिक परिवारों को वित्तीय साक्षरता का पाठ पढ़ाया, द मनी क्लॉज प्लेटफॉर्म के जरिए भारत से लेकर नाइजीरिया तक फैलाई आर्थिक जागरूकता। कक्षा 10 में शुरू किया चेंजमेकर प्रोजेक्ट, आज 20 से अधिक गांवों में पहुंचा अभियान, 15 हजार से अधिक ग्रामीण परिवारों को बैंकिंग और वित्तीय साक्षरता से जोड़ा, द मनी क्लॉज प्लेटफॉर्म के 2.5 लाख से अधिक पाठक।

क्लीन स्वीप से बचने के इरादे से उतरेगा भारत

» इंग्लैंड से आखिरी टी20 मैच आज, 3-0 से सीरीज में पीछे है भारतीय टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

साउथम्प्टन। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला का अंतिम मुकाबला शनिवार को साउथम्प्टन में खेला जाएगा। कप्तान श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली भारतीय टीम पहले ही सीरीज गंवा चुकी है और अब उसकी कोशिश 0-4 से क्लीन स्वीप होने की शर्मनाक स्थिति से बचने की होगी। बेलफास्ट से शुरू हुआ भारत का यह दौरा अब साउथम्प्टन पहुंच चुका है, लेकिन छह शहरों की यात्रा के बावजूद एक चीज नहीं बदली है- श्रेयस अय्यर अभी भी बतौर कप्तान अपनी पहली जीत का इंतजार कर रहे हैं। भारतीय पुरुष टीम के लिए यह 2006 में पहला टी20 अंतरराष्ट्रीय खेलने के बाद सबसे लंबा जीत का सूखा बन गया है।

पूरी श्रृंखला में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। अगर भारत अंतिम मुकाबला जीत भी लेता है तो सीरीज नहीं बचा पाएगा, लेकिन 1-3 की हार 0-4 के क्लीन स्वीप से कहीं बेहतर मानी जाएगी। भारतीय बल्लेबाजों के लिए सबसे बड़ी चुनौती जोफ्रा आर्चर और जॉश टंग की तेज गेंदबाजी रही है। वहीं सैम करन की धीमी और स्किड होने वाली गेंदों ने भी उन्हें लगातार परेशान किया। गेंदबाजी में भारत की मुश्किलें और बढ़ गई हैं क्योंकि वरुण चक्रवर्ती और हर्षित राणा हैमस्ट्रिंग चोट के कारण बाहर हो गए हैं। बल्लेबाजी में वैभव सूर्यवंशी पर भरोसा बरकरार रख सकता है, हालांकि वह शॉर्ट गेंदों के खिलाफ संघर्ष करते दिखे हैं। संजू सैमसन का प्लेइंग इलेवन और जिम्बाब्वे दौरे दोनों से बाहर रहना चर्चा का विषय बना हुआ है। यदि उन्हें मौका दिया जाता है तो तिलक वर्मा को बाहर बैठना पड़ सकता है और शीर्ष क्रम में बदलाव करना होगा।

टीम की लगातार नाकामी पर बीसीसीआई सख्त, होगी प्रदर्शन की समीक्षा

मुंबई। टी20 विश्व कप चैंपियन भारत की लगातार खराब फॉर्म के बाद भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने बड़ा फैसला लिया है। बोर्ड ने पुरुष टी20 टीम के प्रदर्शन की विस्तृत समीक्षा करने का ऐलान किया है। यह समीक्षा इंग्लैंड के खिलाफ 19 जुलाई को समाप्त होने वाली वनडे सीरीज के तुरंत बाद होगी। इंग्लैंड दौरे के खत्म होते ही होगी, जिसमें लगातार दो टी20 सीरीज हारने के कारणों और टीम की कमियों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा कि पुरुष टी20 टीम इस समय खराब दौर से गुजर रही है। ऐसे में इंग्लैंड दौरा समाप्त होने के बाद टीम के प्रदर्शन की विस्तृत समीक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा, स्थिति बिल्कुल साफ है। इंग्लैंड और उससे पहले आयरलैंड के खिलाफ भारतीय टी20 टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। इसलिए सीरीज खत्म होने के बाद हम समीक्षा करेंगे। टीम किन समस्याओं का सामना कर रही है, इसका विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा और उन्हें दूर करने की कोशिश की जाएगी।

पंजाब में थम नहीं रही है कांग्रेस की कलह

» वडिंग ने प्रभारी की बैठक में जाने से किया इनकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष राजा वडिंग ने भूपेश बघेल और चरणजीत सिंह चन्नी की बैठक से दूरी बना ली है, यह आशंका जताते हुए कि उनके खिलाफ चर्चा हो सकती है। यह कदम पंजाब कांग्रेस में चल रही नेतृत्व कलह को उजागर करता है, हालांकि वडिंग ने पार्टी में एकजुटता बनाए रखने का दावा किया है। उनकी यह अनुपस्थिति भविष्य की राजनीतिक रणनीति और आंतरिक मतभेदों के समाधान पर सवाल उठाती है। पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने शुक्रवार को घोषणा की कि वह पंजाब के लिए महासचिव प्रभारी भूपेश बघेल और पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के बीच होने वाली बैठक में शामिल नहीं होंगे।

यह बैठक आज-शनिवार को होनी है और यह बैठक चन्नी और सुखजिंदर सिंह

रंधावा के आंतरिक मतभेद की खबरों के बीच पिछली बैठक में शामिल न होने के बाद हो रही है। राजा वडिंग ने माना कि बैठक में उनके खिलाफ बातें हो सकती हैं, क्योंकि पंजाब कांग्रेस में मतभेद लीडरशिप में बदलाव की वजह से हैं और वे खुद स्टेट कांग्रेस चीफ हैं। वडिंग ने कहा कि भूपेश बघेल बैठक में जा रहे हैं। आने वाले दिनों में सब ठीक हो जाना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि मैं जाऊंगा, क्योंकि हो सकता है कि मेरे खिलाफ बातें हों। बेहतर होगा कि वे मेरे बिना ही बैठक करें। कभी-कभी इंसान आमने-सामने खुलकर बात नहीं करता और दूसरे व्यक्ति को बुरा भी लग सकता है। इसलिए बेहतर है कि वे मेरे बिना ही बैठक करें। हम सब एकजुट हैं। छोटी-मोटी बातें लीडरशिप के साथ बातचीत से सुलझा ली जाएंगी। मुझे किसी से कोई दिक्कत नहीं है। कुछ सीनियर नेता पिता समान हैं और मैं उनके सामने झुकूंगा। राजा वडिंग ने बताया कि भूपेश बघेल ने उन्हें मीटिंग के बारे में जानकारी दी थी।

पंजाब कांग्रेस यूनिट एकजुट : वडिंग

आंतरिक मतभेदों के बावजूद, राजा वडिंग ने भरोसा जताया कि 27 के विधानसभा चुनावों से पहले पंजाब कांग्रेस यूनिट एकजुट बनी हुई है। बघेल और चन्नी के बीच होने वाली बैठक में इन मुद्दों पर चर्चा होने और पार्टी में एकजुटता को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

रॉबर्ट वाड्रा भूमि सौदा मामले में ईडी ने कोर्ट को सौंपी रिपोर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। ईडी ने हरियाणा के गुरुग्राम जिले के शिकोहपुर (अब सेक्टर 83) में हुए जमीन सौदे से जुड़े धनशोधन मामले में बड़ी कार्रवाई की है। एजेंसी ने कारोबारी रॉबर्ट वाड्रा और अन्य आरोपियों के खिलाफ एक सीलबंद लिफाफे में अपनी स्थिति रिपोर्ट कोर्ट को सौंप दी है।

मामले की सुनवाई कर रहे विशेष न्यायाधीश सुशांत चांगोत्रा को ईडी ने सूचित किया कि इस मामले में मैसर्स डीएलएफ की भूमिका को लेकर अभी आगे की जांच की जा रही है। न्यायाधीश ने अपने आदेश में इसका उल्लेख करते हुए कहा कि ईडी ने सीलबंद लिफाफे में स्थिति रिपोर्ट दाखिल की है, जिसके मुताबिक डीएलएफ की भूमिका की जांच जारी है।

भाजपा में जो आगे बढ़ता है, उसका पर काट दिया जाता है : उदितराज

» नरोत्तम मिश्रा का टिकट कटने पर कांग्रेस का तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने दतिया विधानसभा उपचुनाव के लिए आशुतोष तिवारी को अपना अधिकृत प्रत्याशी घोषित कर दिया है। प्रत्याशी की घोषणा के साथ ही दतिया में चुनावी मुकाबला तेज हो गया है। इस पूरे मामले में कांग्रेस ने भाजपा पर चुटकी ली। पार्टी के वरिष्ठ प्रवक्ता और नेता उदित राज ने कहा कि भाजपा में आगे बढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को नीचे गिराने का कल्चर है। उदाहरण के लिए, शिवराज सिंह चौहान लगभग 9 लाख वोटों से जीते थे, लेकिन उन्होंने उनका कद कम कर दिया। उन्हें केंद्र में भेज दिया गया।

मोहन यादव से पहले, नरोत्तम मिश्रा

मध्य प्रदेश के सबसे जाने-माने नेताओं में से एक थे, हालांकि वे विवादित सांप्रदायिक बयान देने के लिए भी जाने जाते थे। भाजपा में जो भी बड़ा दिखता है, उसे उसकी औकात दिखा दी जाती है। वहां कोई आंतरिक लोकतंत्र नहीं है। नरोत्तम मिश्रा की स्थिति यही दिखाती है।

राम मंदिर चंदे में गबन पर जारी है घमासान

आरोपों पर विपक्ष भड़का, कांग्रेस ने पीएम मोदी को घेरा, संसद सत्र में कांग्रेस इस पर प्रधानमंत्री से सीधे जवाब मांगेगी

» धार्मिक स्थल पर देश की सबसे बड़ी लूट : वेणुगोपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अयोध्या के राम मंदिर को मिले चंदे के कथित गबन के मामले में सियासी तूफान थमने का नाम नहीं ले रहा है। जहां विपक्ष इसको लेकर भाजपा पर हमलावर है वहीं एनडीए सहयोगी भी उसे घेर रहे है। कांग्रेस महासचिव के. सी. वेणुगोपाल ने शनिवार को अयोध्या के राम मंदिर को मिले चंदे और सोने के कथित गबन को लेकर केंद्र सरकार और संघ परिवार पर तीखा हमला बोला है। वेणुगोपाल ने इसे ''भारत में किसी धार्मिक स्थल पर अब तक की सबसे बड़ी लूट'' करार दिया।

उन्होंने इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुप्पी पर गंभीर सवाल खड़े करते हुए कहा कि आगामी संसद सत्र में कांग्रेस इस पर प्रधानमंत्री से सीधे जवाब मांगेगी। केरल के प्रसिद्ध गुरुवायूर मंदिर के बाहर पत्रकारों से बातचीत करते हुए कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि यह मामला सिर्फ पैसों की हेराफेरी का नहीं, बल्कि देश के करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ है।

वेणुगोपाल ने यह सवाल भी उठाया कि भाजपा की केरल इकाई इस मुद्दे पर चुप क्यों है। उन्होंने दावा किया कि यह चुप्पी इस बात का संकेत है कि वे असली दोषियों को बचाना चाहते हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों के संबंध में भी इसी तरह की लूट के आरोप सामने आ रहे हैं।

पूरे देश में मुद्दा उठा रहे हैं और आगे भी उठाते रहेंगे

उन्होंने कहा, ''हम इस मुद्दे को पूरे देश में उठा रहे हैं और आगे भी उठाते रहेंगे। इस लूट ने देश के करोड़ों श्रद्धालुओं को प्रभावित किया है। लेकिन प्रधानमंत्री और गृह मंत्री इस मामले पर चुप हैं। केवल उत्तर प्रदेश पुलिस की एक एसआईटी गठित की गई है और इसके पीछे असली दोषियों को बचाने की मंशा है।'' वेणुगोपाल ने दावा किया कि केवल उच्चतम न्यायालय की निगरानी में जांच से ही इस कथित लूट के असली दोषियों का पता चल सकेगा।

वेणुगोपाल ने इस बात पर भी हैरानी जताई कि हमेशा मुखर रहने वाली भाजपा की केरल इकाई इस पूरे मामले पर रहस्यमयी चुप्पी साधे हुए है। उन्होंने दावा किया कि केरल बीजेपी की यह चुप्पी साफ दर्शाती है कि वे भी घोटाले के असली गुनहगारों को संरक्षण दे रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि सिर्फ अयोध्या ही नहीं, बल्कि उत्तराखंड के प्रसिद्ध बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों के संबंध में भी इसी तरह की वित्तीय अनियमितताओं और लूट के गंभीर आरोप सामने आ रहे हैं, जिनकी जांच होनी बेहद जरूरी है।

विहिप व आरएसएस ने श्रद्धालुओं से चंदे को खूब लूटा

उन्होंने कहा कि विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) जैसे संघ परिवार के संगठनों ने पिछले 20-25 वर्षों से मंदिर के नाम पर श्रद्धालुओं से चंदा एकत्र किया और अब उसी धन और सोने की लूट हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह सब मंदिर ट्रस्ट के उन पदाधिकारियों की जानकारी में हुआ, जिनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री की निगरानी में की गई थी। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और आरएसएस ''वास्तविक रूप से आस्तिक नहीं हैं।उन्होंने कहा, ''उनकी दिलचस्पी केवल हिंदुओं के नाम पर लूट करने और वोटों के लिए लोगों को बांटने में है। यह सिर्फ लूट नहीं, बल्कि श्रद्धालुओं की आस्था पर हमला है।'' वेणुगोपाल ने कहा कि कांग्रेस के लिए यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि इसके विपरीत भाजपा और आरएसएस ने ''अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए भगवान का इस्तेमाल किया।'

राम मंदिर में चढ़ावा चोरी के आरोपों से श्रद्धालु आहत हैं, दोषियों पर होगी कड़ी कार्रवाई : एकनाथ शिंदे

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा है कि अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी की खबरों से राम भक्तों और श्रद्धालुओं को गहरा दुख पहुंचा है। विधान परिषद में मानसून सत्र के आखिरी दिन बोलते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि इस मामले में जो भी दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस मामले में किसी भी दोषी को बख्शेंगे नहीं। शिवसेना प्रमुख शिंदे ने जोर देकर कहा कि जनवरी 024 में उद्घाटित हुए इस भव्य राम मंदिर को मिलने वाले दान के प्रबंधन में किसी भी तरह की गड़बड़ी या अनियमितता का कोई भी व्यक्ति समर्थन नहीं कर सकता। विपक्ष द्वारा लाए गए अंतिम सप्ताह प्रस्ताव का जवाब देते हुए उन्होंने प्रतिद्वंद्वी शिवसेना (उबाठा) पर तीखा हमला बोला। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे का नाम लिए बिना आरोप लगाया कि जो लोग आज अयोध्या मंदिर में कथित चोरी की आलोचना कर रहे हैं, उन्हीं के सहयोगियों ने देश के सबसे अमीर मंदिरों में से एक, सिद्धिविनायक मंदिर को लूटने का पाप किया था। शिंदे ने सवाल उठाया कि जब मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर के दान पात्र को लूटा गया था, तब तत्कालीन सरकार ने इसकी जांच के आदेश क्यों नहीं दिए थे। उनका इशारा साफ तौर पर उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली तत्कालीन सरकार की तरफ था। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए कहा कि हिंदुत्व कोई ऐसी टी-शर्ट नहीं है जिसे जब मन चाहे बदल लिया जाए।

डोनाल्ड ट्रंप की धमकी के बाद फिर धमाके

हजार मिसाइलों वाली धमकी से ईरान भड़का

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से ईरान को एक हजार मिसाइलों की चेतावनी दिए जाने के कुछ ही समय बाद ईरान की राजधानी तेहरान के पूर्वी हिस्से में धमाकों की आवाजें सुनाई देने से हड़कंप मच गया।

धमाकों की खबर सामने आते ही अटकलों का दौर शुरू हो गया, हालांकि ईरान की ओर से शुरुआती प्रतिक्रिया में इन्हें नियंत्रित विस्फोट बताया गया है. फिलहाल धमाकों के कारण, किसी तरह के नुकसान या हताहतों की आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। न्यूज एजेंसी फार्स न्यूज एजेंसी के मुताबिक, तेहरान प्रांत के पूर्वी इलाके से धमाकों की आवाजें सुनी गईं. हालांकि एजेंसी ने यह नहीं बताया कि विस्फोट किस वजह से हुए या इनका संबंध किसी सैन्य गतिविधि से है या नहीं।

ये नियंत्रित विस्फोट थे कोई नुकसान नहीं : ईरान

धमाकों के बाद ईरानी अधिकारियों की ओर से शुरुआती प्रतिक्रिया में कहा गया कि ये नियंत्रित विस्फोट थे। हालांकि अभी तक इस बारे में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की गई है, साथ ही किसी तरह के जान-माल के नुकसान या हताहत होने की भी पुष्टि नहीं हुई है।

बांकीपुर उपचुनाव को लेकर बिहार में भी बवाल

» बीजेपी के नए उम्मीदवार पर राजद का निशाना

» विपक्ष बोला- प्रत्याशी नीरज सिन्हा की जन्मतिथि गलत लिखी गई है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार की हाई प्रोफाइल विधानसभा सीट बांकीपुर पर उपचुनाव की तारीख का ऐलान होने के बाद से ही सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। नितिन नवीन की इस सीट पर जल्द ही मतदान होगा और नया विधायक तय किया जाएगा। इससे पहले सभी बड़े राजनीतिक दलों ने अपने उम्मीदवार उतार दिए हैं और चुनावी आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है। इस बीच सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कैंडिडेट नीरज सिन्हा को लेकर विवाद भी खड़ा हो गया है।

बीजेपी के नए प्रत्याशी नीरज सिन्हा पर राजद ने सवाल उठाए हैं। मृत्युंजय तिवारी का कहना है कि बीजेपी ने नए कैंडिडेट का जो बायोडाटा जारी किया है उसमें उनके जन्म का साल 1994 है। इसके बाद यह बताया गया है कि उन्होंने बीजेपी साल 2006 में जॉइन कर ली थी। यानी वह केवल 12 वर्ष के बच्चे थे, जब बीजेपी ने उन्हें अपना सदस्य बना लिया। राजद का सवाल है कि यह क्या खेल चल रहा है?

अभिषेक कुमार सिन्हा का नाम वापस लेना जन बल की जीत : पीके

प्रशांत किशोर ने बांकीपुर उपचुनाव में बीजेपी प्रत्याशी अभिषेक कुमार सिन्हा के नाम वापस लेने को जन बल की जीत बताया, दावा किया कि अब तक बीजेपी के डर से लोग भागते थे, पर पहली बार भाजपा उम्मीदवार मैदान छोड़ भागा। जन सुराज पार्टी ने बीजेपी पर प्रशांत किशोर से डरकर उम्मीदवार बदलने का आरोप लगाया है, जिसके बाद अब नीरज कुमार सिन्हा को नया प्रत्याशी बनाया गया है। किशोर ने इस चुनाव को बिहार में बीजेपी-नीत सरकार के कामकाज पर जनमत संग्रह बताया है। जन सुराज पार्टी ने दावा किया कि बिहार में बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव के लिए बीजेपी द्वारा अपना उम्मीदवार बदले जाने के बाद पार्टी अपने संस्थापक प्रशांत किशोर से डरी हुई है। वहीं, प्रशांत किशोर ने भाजपा उम्मीदवार के नाम वापस लेने पर दिया बड़ा बयान दिया। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि जन बल के आगे कोई बल नहीं है, अबतक लोग भाजपा के डर से भागते थे लेकिन ये पहली बार इंसाफ हुआ है कि भाजपा का उम्मीदवार भाग गया। यह प्रतिक्रिया तब आई जब बीजेपी के मूल उम्मीदवार अभिषेक कुमार सिन्हा ने नामांकन पत्र दाखिल करने के एक दिन बाद ही पारिवारिक कारणों का हवाला देते हुए अपना नामांकन वापस ले लिया।

बदरीनाथ चढ़ावा हेराफेरी

निलंबित कर्मचारी की याचिका पर हाईकोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब, सुनवाई 16 को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने विश्व प्रसिद्ध श्री बदरीनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाई जाने वाली थाली भेंट की गणना के दौरान वित्तीय अनियमितता के आरोप में निलंबित कर्मचारी प्रमोद नौटियाल की ओर से अपने निलंबन आदेश व पुलिस की ओर से दर्ज एफआईआर को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई के बाद 16 जुलाई की तिथि नियत करते हुए सरकार को स्थिति स्पष्ट करने के निर्देश दिए हैं। न्यायमूर्ति आलोक मेहरा की एकलपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई।

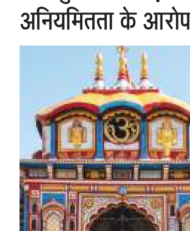

मामले के अनुसार मंदिर समिति को 2 जुलाई 26 को सूचना मिली थी कि श्री बदरीनाथ मंदिर में थाली भेंट की गिनती के दौरान वित्तीय गड़बड़ी की गई है। इस पर संज्ञान लेते हुए मंदिर समिति के अध्यक्ष के आदेशानुसार एक विभागीय जांच समिति का गठन किया गया था। विभागीय जांच समिति की प्रारंभिक जांच आख्या में यह बात सामने आई कि मंदिर समिति के कार्मिक प्रमोद नौटियाल ने कथित तौर पर सुबह लगभग नौ बजे से साढ़े नौ बजे के बीच थाली भेंट गणना स्थल से अवैध रूप से धनराशि उठाई थी। इस पुष्टि के बाद मंदिर समिति द्वारा आरोपी कार्मिक प्रमोद नौटियाल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया। मंदिर समिति के आदेशों के क्रम में श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के प्रभारी मंदिर अधिकारी युद्धवीर पुष्पवान ने कोतवाली श्री बदरीनाथ में लिखित तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। तहरीर के आधार पर पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत मुकदमा पंजीकृत किया है।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in ।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा